कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : **100/-**
त्रि वार्षिक : **250/-**

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qksu (dk-) : +91(11) 23381428
QSDl : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

श्री नितिन गडकरी का अध्यक्षीय भाषण................................ 7
राजनीतिक प्रस्ताव.. 15
आर्थिक प्रस्ताव.. 18
श्री लालकृष्ण आडवाणी का मार्गदर्शन................................ 22

श्रद्धांजलि
केदारनाथ जी : आदर्श कार्यकर्ता
– **प्रभात झा**.. 25
केदारनाथ साहनी : वह हमारे रोल मॉडल थे
–ओम प्रकाश कोहली.. 27

अन्य
अमरीका प्रवास : भारतीयों ने अमरीका में सम्मान प्राप्त किया है
– **रामलाल**.. 28
श्रीलंका प्रवास : द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने पर जोर
– **सुमित्रा महाजन**.. 30

ऐतिहासिक चित्र

पं. प्रेमनाथ डोगरा के साथ बैठे हुए पं. दीनदयाल उपाध्याय, पीछे खड़े हैं श्री जे.पी. माथुर एवं अन्य नेतागण

आपत्तियों का भी स्वागत

सामाजिक कार्यकर्ताओं को आराम या प्रतिष्ठा के बदले प्राय: कष्ट तथा अपमान ही सहना पड़ता है, पर सच्चा कार्यकर्ता इन सबका हँसकर स्वागत करता है। संत तुकाराम जी का जीवन भी ऐसा ही था। उनके मित्रों, रिश्तेदारों और समाज के लोगों ने उनकी निन्दा की। उन्हें पीटा, उनके रास्ते में काँटे बिखेरे। उन्हें धोखा दिया, जिससे उनकी दुकान बन्द हो गयी, पर वे सदा ईश्वर भजन में लगे रहे। उनकी पहली पत्नी बहुत अच्छे स्वभाव की थी, पर वह कम समय ही जीवित रही। दूसरी पत्नी बहुत कर्कश स्वभाव की थी। इस पर भी तुकाराम जी सदा ईश्वर को धन्यवाद ही देते हुए कहते थे – हे ईश्वर, तेरी बड़ी कृपा है कि ऐसी पत्नी मिली है। इस कारण मुझे सदा तेरा स्मरण बना रहता है। श्री गुरुजी कहते थे कि सच्चा कार्यकर्ता प्रत्येक कठिनाई को ईश्वर का प्रसाद समझकर स्वीकार करता है।

असली सोना अग्निपरीक्षा से कभी घबराता नहीं, क्योंकि उसमें से वह और अधिक खरा होकर निकलता है।

–'श्री गुरुजी बोधकथा' से साभार

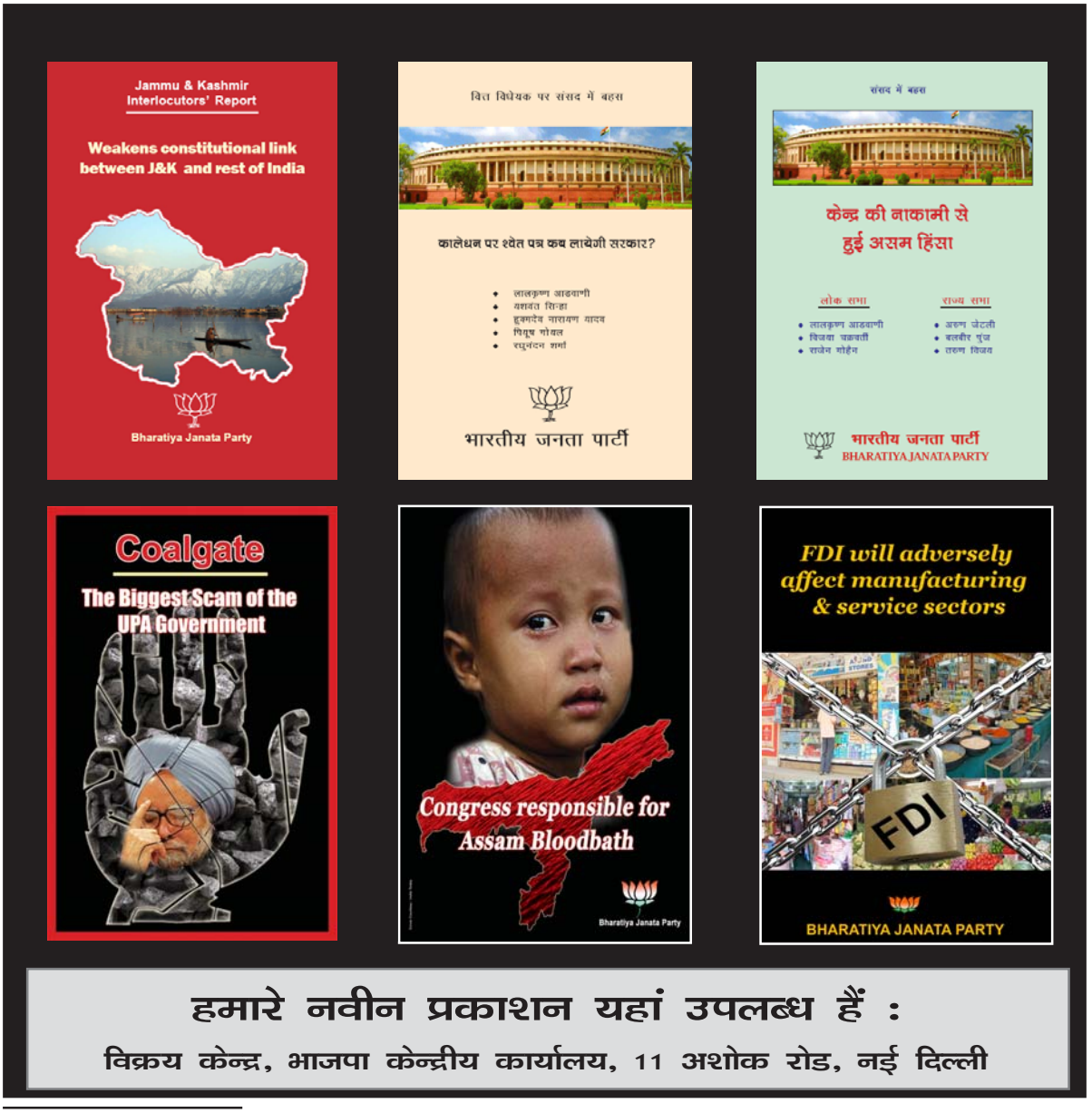

सूरजकुंड से नई सुबह होगी

अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा और कमल खिलेगा'' अटलजी ने मुंबई में अपने भाषण में यह वाक्य उस समय कहा था, जब भाजपा का पहला सम्मेलन मुंबई में संपन्न हुआ। तब से लेकर अब तक 'भाजपा' भारतीय राजनीति में अपना विशिष्ट और केन्द्रीय स्थान बना चुकी है। बिना भाजपा के भारतीय राजनीति पूरी नहीं हो सकती। सूरजकुंड में भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने कहा कि अवसर हमारी प्रतीक्षा कर रहा है और हमें परिश्रम और पराक्रम के लिए संसद और सड़क तक का संघर्ष करना होगा। एक दिवसीय कार्यकारिणी और दो दिन की राष्ट्रीय परिषद से यही ध्वनि निकली कि सूरजकुंड से 'सूरज' निकलेगा, अंधेरा छटेगा और कमल खिलेगा।

भारतीय जनता पार्टी की ओर देश देख रहा है। हमें देश के मनोरथ को पूरा करना होगा। यह हमारा देश के प्रति कर्त्तव्य है। 'भाजपा' को भारत का भविष्य बनाना ही होगा। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि कहा नहीं जा सकता 'चुनाव' (मध्यावधि) कब आ जाए। अत: हम सभी को तैयार रहना होगा। उन्होंने कहा कि हमें हर हाल में दो सौ सीटें लोकसभा की जीतनी होगी। हम जहां नहीं पहुंचे हैं, वहां हमें ताकत से पहुंचना होगा और जहां हम पहुंच चुके हैं, वहां हमें अपनी पहुंच को प्रभावी बनाना होगा। कार्यकारिणी में सभी इस बात से खुश थे कि हरियाणा भाजपा ने गजब की हिम्मत दिखाई। हरियाणा में भाजपा की राजनैतिक शक्ति बहुत मजबूत नहीं कही जा सकती पर जिस तरह की व्यवस्था वहां के कार्यकर्ताओं ने किया, वह निश्चित ही साफतौर पर इस बात का संकेत था कि हरियाणा भाजपा पूरी तौर पर एक मजबूत संगठन बनकर उभरा है। हरियाणा के कार्यकर्ताओं ने जिस तरह व्यवस्थाएं जुटाई थीं, वह उत्साही कार्यकर्ताओं की हिम्मत का ही परिणाम है। देशभर से आए कार्यकर्ताओं में एक उमंग और विश्वास स्वत: देखा जा सकता था। राष्ट्रीय परिषद में जहां एक ओर राजनैतिक और दूसरी ओर आर्थिक प्रस्ताव आए, वहीं भाजपा ने आज की संघर्ष की रुपरेखा भी तय की।

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने अपने समापन भाषण से सभी उपस्थित कार्यकर्ताओं का दिल जीत लिया। उन्होंने भाजपा शासित राज्यों की जहां खुलकर प्रशंसा की, वहीं कांग्रेसनीत यूपीए सरकार की असफलताओं को गिनाया। उन्होंने कहा कि भाजपा की राज्य सरकारों से और जो लोग भाजपा से चुने जाते हैं उन पर देश की निगाहें रहती हैं। ऐसे समय में हमें बहुत सावधानी से रहना होगा। कांग्रेस चाहे जो करें उनसे देश की जनता को आश्चर्य नहीं होता पर भाजपा से यदि छोटी सी गलती हो जाए तो बात का बतंगड़ बन जाता है। उसका मुख्य कारण है कि भाजपा को लोग ''कांग्रेस'' के रूप में नहीं देखना चाहते हैं। वह चाहते हैं कि भाजपा ऐसा कोई काम न करे, जिससे भाजपा की साख को आंच आए। उन्होंने नसीहत देते हुए कहा कि भाजपा को विकास की रचनात्मक दिशा के साथ-साथ अपनी विचारधारा के क्षेत्र का विस्तार करने में घोर परिश्रम करना होगा।

आज आवश्यकता है कि हमारी विचारधारा के क्षेत्र का विस्तार हो। हमें इसके लिए निश्चित समय में कार्ययोजना बनानी होगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस-नीत यूपीए ने देश में अस्थिरता और अनास्था का दौर पैदा किया है, वह खतरनाक है। देश एक खतरनाक मोड़ पर है। अत: हमें देश को इस खतरनाक मोड़ से निकालना होगा। इसकी शुरूआत भाजपा को गुजरात और हिमाचल जहां उसकी सरकार है, वहां पुन: सरकार लाकर करनी होगी। 'देश' की राजनीति के बारे में उन्होंने साफतौर पर कहा कि मुझे यह कहने में कोई भी संकोच नहीं है देश 'मध्यावधि' चुनाव की बाट जोह रहा है। ऐसे समय में भाजपा को चुनाव के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेसनीत

यूपीए सरकार के घटक दल एक-एक करके साथ छोड़ने में लगे हैं। स्थिति इतनी भयावह हो रही है कि कांग्रेस के सहयोगी दल यह सोचने लगे हैं कि अगर वे अब कांग्रेस के साथ रहे तो जनता उन्हें भी ठिकाने लगा देगी। जनता पैनी निगाहों से कांग्रेसनीत यूपीए को देख रही है। कांग्रेस के घोटालों से उनके सहयोगी दलों के चेहरे भी काले हो रहे हैं अत: वे कभी भी यूपीए से अपना संबंध तोड़ सकते हैं। जब ऐसा होगा तो भला मध्यावधि चुनाव को कौन रोक सकता है। अत: हमें इस चुनौती के लिए भी तैयार रहना होगा। वास्तव में भाजपा के लिए यह सुनहरा अवसर है और इस अवसर को अंजाम तक पहुंचाने के लिए एक साथ कदम से कदम मिलाकर सबको साथ में लेकर आगे बढ़ना होगा।

संगठन को मजबूत करने की दृष्टि राष्ट्रीय परिषद में पार्टी के संविधान में लगातार दो बार अध्यक्ष होने संबंधी प्रावधान को सुनिश्चित किया गया।■

फरीदाबाद (हरियाणा) में 'कांग्रेस हटाओ-देश बचाओ' रैली

कोयले घोटाले से कांग्रेस का मुंह काला हुआ है : नितिन गडकरी

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने घोटालों पर कांग्रेस को चौतरफा घेरते हुए कहा कि हवा में टू जी, जमीन में कॉमनवेल्थ व पाताल में कोयला घोटाला कांग्रेस ने किया है। सही मायने में अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी का नाम अखिल भारतीय कोयला पार्टी होना चाहिए। कोयला घोटाले से कांग्रेस का मुंह काला हुआ है।

श्री गडकरी 28 सितम्बर 2012 को फरीदाबाद में आयोजित 'कांग्रेस हटाओ-देश बचाओ' रैली को संबोधित कर रहे थे। रैली में 50 हजार से अधिक लोगों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

इस रैली को संबोधित करते हुए भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि मौजूदा सरकार 'वेंटिलेटर' पर है और यह जितनी जल्दी चली जाए उतना देश के लिए अच्छा होगा। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को आड़े हाथों लेते हुए उन्होंने कहा कि देश में आजादी के बाद से मनमोहन जैसा कमजोर प्रधानमंत्री नहीं देखा गया। भाजपा शासित राज्यों की प्रगति पर संतोष जताते हुए उन्होंने कहा कि देश के नौ राज्यों में एनडीए की सरकार है जिनमें से सात में भाजपा की सरकार है तथा इन सभी प्रदेशों की सरकारों ने विकास के नए आयाम स्थापित किए है। उन्होंने देश की जनता को विश्वास दिलाया कि भाजपा देश के साथ किसी भी कीमत पर अहित नहीं होने देगी तथा देश की जनता भ्रष्टाचार की पर्याय बन चुकी कांग्रेस को उखाड़ फेंकने में भाजपा का साथ दें।

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने महंगाई के मुद्दे पर यूपीए सरकार को चौतरफा घेरा। उन्होंने कहा कि यूपीए सरकार की कारगुजारियों से देश में महंगाई बढ़ी है तथा किसान की परेशानी बढ़ी है। राज्यसभा में नेता विपक्ष श्री अरुण जेटली ने कहा कि बोफोर्स घोटाले के बाद राजीव गांधी की सरकार चली गई थी तथा इस भ्रष्ट सरकार का भी जाना तय है तथा देशवासी भारतीय जनता पार्टी को विकल्प के रूप में देख रहे है। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह की अंतरआत्मा को एक बार फिर से झकझोरते हुए कहा है कि आखिरकार प्रधानमंत्री न्यूक्लियर डील व एफडीआई जैसे मुद्दों पर ही सिंघम की भूमिका में क्यों आते हैं, देश की भलाई के लिए सिंघम क्यों नहीं बनते है। रैली को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने भी संबोधित किया।

रैली में आए सभी अतिथियों का प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री कृष्णपाल गूर्जर व उनके सहयोगी पदाधिकारियों द्वारा पगड़ी पहनाकर व हुक्का भेंट कर स्वागत किया गया। ■

भ्रष्टाचारी कांग्रेसी कुशासन का अंत करने के लिए 'दिल्ली कूच' करें : नितिन गडकरी

सूरजकुंड (हरियाणा) में भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं परिषद् बैठक 26-28 सितम्बर 2012 को सम्पन्न हुई। इस बैठक में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी सारगर्भित एवं ओजस्वी भाषण देते हुए भ्रष्टाचार के मुद्दे को लेकर कांग्रेसनीत संप्रग सरकार पर जमकर बरसे। उन्होंने कहा कि तृणमूल कांग्रेस का समर्थन वापस लेना यह इंगित करता है कि यूपीए के घटक दलों को कांग्रेस अब डूबता जहाज नजर आ रहा है। अल्पमत में आई मनमोहन सिंह सरकार में अगर तनिक भी नैतिकता है तो प्रधानमंत्री को अपना त्यागपत्र दे देना चाहिए। उन्होंने बैठक में उपस्थित प्रतिनिधियों से आह्वान करते हुए कहा, 'आइए, हम यहां से भ्रष्टाचारी कांग्रेसी कुशासन का अंत करने के लिए 'दिल्ली कूच' करें। हम यहां उनके भाषण का पूरा पाठ प्रकाशित कर रहे हैं:

आदरणीय आडवाणी जी, मेरे अन्य सहयोगी तथा इस राष्ट्रीय परिषद में उपस्थित कार्यकर्ता भाईयों एवं बहनों.....!

सबसे पहले हरियाणा की इस हरिभूमि पर मैं आपका हृदय से स्वागत करता हूं। हम सूरजकुंड में इकट्ठा हुए हैं और यह नगरी ऐतिहासिक महत्व की तो है ही, मगर वर्तमान में भी इसकी अपनी एक पहचान बनी हुई है। सूरजकुंड प्राचीन सूर्य मंदिर के लिए मशहूर है। किसी जमाने में सरस्वती नदी यहां बहती थी और यहीं पर पुराणकाल में ब्रह्मा ने तपस्या भी की थी। वर्तमान में सूरजकुंड देश के परिश्रमी कारीगरों के विश्वप्रसिद्ध मेले के लिए जाना जाता है। प्राचीन, ऐतिहासिक और वर्तमान संदर्भों को जोड़ दें तो सूरजकुंड प्रकाश, परिश्रम और प्रगति का प्रतीक बनता है। मुझ जैसे कार्यकर्ता को लगता है कि आशा की अनगिनत किरणों से प्रकाशित वायुमंडल में अगर हम परिश्रम करेंगे तो विजय निश्चित है - यही सूरजकुंड का संदेश है।

सूरजकुंड की इस प्राचीन भूमि पर खड़े होकर जब हम अपने देश का मानचित्र आंखों के सामने लाते हैं तो स्थिति निराशाजनक दिखाई देती है। राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक सहित सभी मोर्चों पर आज एक बिखराव है। हताशा का वातावरण है। सत्ता में बैठा नेतृत्व असमंजस में है और अपनी लगातार हो रही आलोचना से बौखलाकर और अपने भ्रष्टाचार से ध्यान हटाने के लिए वह बगैर सोचे समझे निर्णय कर रहा हैं।

राजनीतिक अनिश्चितता

हम इतिहास के एक नाजुक मोड़ पर मिल रहे हैं। केन्द्र में यूपीए सरकार बहुमत खो चुकी है। जनादेश वह पहले ही खो चुकी थी। नीतियों के नाम पर जमी जड़ता 'पॉलिसी पैरालिसिस' (नीति पंगुता) में बदल चुकी है। कांग्रेस की अस्थिर सरकार संसद की सहमति के बिना FDI जैसे दूरगामी महत्वपूर्ण फैसले कर रही है! देश की जनता कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए की भ्रष्टाचारी, दिशाहीन सरकार से पूरी तरह तंग आ चुकी है और इसे बदलना चाहती है।

यूपीए के घटक दलों की स्थिति ऐसी है कि न सह सकते हैं, न कह सकते हैं! यूपीए का बाहर से समर्थन करने वाली पार्टियों में से कईयों के सामने केवल राजनीतिक लाभ-हानि का गणित है। वैसे तो उनमें से कई निजी तौर पर मानते हैं कि भ्रष्टाचार में डूबी यूपीए सरकार का एक दिन भी सत्ता में रहना देश के लिए हानिकारक है। मगर सार्वजनिक तौर पर वह इसे स्वीकार करने से कतराते हैं।

मुझे गर्व है कि इसी माहौल में भाजपा संसद में और संसद के बाहर भी यूपीए के प्रति लोगों में व्याप्त असंतोष को कारगर तरीके से मुखर करने में सफल रही। हम संसदीय तंत्र के प्रति पूरी श्रद्धा रखते हैं। संसदीय विधाओं/प्रावधानों का कारगर उपयोग सुनिश्चित करने के लिए हम निरंतर प्रयासरत रहते हैं। मगर कांग्रेस ने जब संसदीय कार्य का भी राजनीतिकरण करने की कोशिशें कीं तो हमें असाधारण कदम उठाना पड़ा। कांग्रेस ने संसद और विधानमंडलों की हमेशा उपेक्षा की है। इनकी न 'लोक' के प्रति निष्ठा है और न ही 'तंत्र' के प्रति आस्था। उनके इसी दोगलेपन को हमें बेनकाब करना है।

अपने को 'चर्चा के लिए सदैव तैयार बताने वाले' यूपीए

के लोग 2जी मामले में बनी संयुक्त संसदीय समिति के सामने आने से क्यों डर रहे हैं? देश के प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि 'मेरा मौन रहना ही सबके लिए हितकारी है।' प्रधानमंत्रीजी के इस बयान का क्या मतलब है? क्या उनके मौन तोड़ने से कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व परेशानी में पड़ जाएगा? क्या मनमोहनजी अपने नेताओं के हित की बात सभी के हित से जोड़ रहे हैं? देश जानना चाहता है कि वह कौन सी मजबूरी है जो मनमोहनजी को 'मौन-मोहन' बना रही है?

यूपीए : एक-दूसरे को बचाने वाला गठबंधन

यूपीए के गठबंधन से इसकी चुनाव पूर्व सहयोगी सुश्री ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस द्वारा समर्थन वापस लेने से एक बात पुनः सिद्ध हुई है कि कांग्रेस, गठबंधन चलाने में समर्थ नहीं है। कांग्रेस न तो क्षेत्रीय अस्मिताओं का सम्मान करती है और न ही अपने सहयोगियों का। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री द्वारा लगाया गया आरोप कि 'उनके फोन टेप किए जा रहे है' - इस की एक बानगी है। गठबंधन धर्म निभाने में यू.पी.ए. की असफलता देश की राजनीति और सरकार को भी प्रभावित कर रही है। मुझे लगता है कि तृणमूल कांग्रेस का समर्थन वापस लेना यह भी इंगित करता है कि यूपीए के घटक दलों को कांग्रेस अब डूबता जहाज नजर आ रहा है। अल्पमत में आई मनमोहन सिंह सरकार में अगर तनिक भी नैतिकता है तो प्रधानमंत्री को अपना त्यागपत्र दे देना चाहिए।

तृणमूल कांग्रेस के समर्थन वापसी के बाद यूपीए गठबंधन अब मात्र उन दलों का जमावड़ा बन गया है जो किसी न किसी रूप में भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे हैं। लगता है यह गठबंधन एक-दूसरे के कुकर्मो को बचाने वालों का गिरोह बन चुका है। इस गिरोह चलाने में कांग्रेस का सबसे बड़ा साथी बनी है सी.बी.आई. यानी कांग्रेस ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन। देश की जनता अब ऐसे किसी गठबंधन को एक क्षण भी बर्दाश्त नहीं करेगी।

मैं, उन सभी दलों, जो कांग्रेस के भ्रष्टाचार से देश की जनता को मुक्ति दिलाना चाहते हैं, से आह्वान करता हूं कि वे खुलकर सामने आएं विशेषकर वे भी, जो कांग्रेस की गोद में बैठकर कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा बनाने का सपना देख रहे हैं। किसी न किसी मनगढ़ंत मुद्दे की आड़ में कांग्रेस का साथ देते रहने के मोह से इन दलों को अब बाहर आकर हिम्मत दिखानी चाहिए। ऐसी बहानेबाजी से अब यह दल जनता को बेवकूफ नहीं बना सकते। दिल्ली में दोस्ती और लखनऊ में नूराकुश्ती - यह नाटक जनता अब चलने नहीं देगी।

भ्रष्टाचार

प्रतिनिधि भाईयों और बहनों, मनमोहन सरकार ने भ्रष्टाचार के नये रिकार्ड बनाए हैं। कांग्रेस में सत्ता हमेशा वंश परंपरा से चलती आयी है। भ्रष्टाचार भी वहां ऐसे ही चला आ रहा है। स्वाधीन भारत में भ्रष्टाचार का इतिहास अगर कोई लिखेगा तो उसे कांग्रेस सरकारों का इतिहास अलग से लिखने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यह 'बाय वन, गेट वन फ्री' (Buy one, get one free) जैसा मामला है। एक इतिहास लिखो तो दूसरा मुफ्त में उपलब्ध होगा। 2-जी घोटाला, कॉमनवेल्थ गेम्स घोटाला, आदर्श घोटाला इन सारे घोटालों की जांच अभी पूरी ही नहीं हो पायी कि अरबों-खरबों रुपयों का नया कोयला-घोटाला उजागर हुआ है।

मित्रों, कोयला घोटाला स्वयं प्रधानमंत्री की देखरेख में हुआ है। इस घोटालों से न केवल प्रशासन तंत्र का बल्कि नीति-निर्धारण (Policy Framing) की व्यवस्था का भी राजनीतिकरण और निजीकरण करने की कोशिश हुई है। कांग्रेस के एक प्रधानमंत्री ने कभी कहा था कि 'निर्णय न होना यह भी एक निर्णय है।' डा॰ मनमोहन सिंह ने स्थापित कर दिया है कि 'नीति संबंधी निर्णय लटकाए रखना यह भी एक नीति है।' किसी सरकार के लिए जरूरी होता है सक्षम नेतृत्व, नेतृत्व की विश्वसनीयता, विकास की दृष्टि, निर्णय क्षमता और समाज - देश के प्रति कटिबद्धता। यूपीए सरकार में इन सारी बातों का पूरा अभाव है। कोयला घोटाले से इस सरकार ने व्यवस्था की धज्जियां उड़ाई हैं। 2जी के बाद कोयला-घोटाले से यह स्थापित हुआ है कि जितनी सारी प्राकृतिक संपदा है उसकी महाभयंकर लूट का मानों एक अभियान ही यूपीए चला रही है। हवा, पानी, ऊर्जा, खेती, जंगल और खनिज क्षेत्र में भी इन्होंने भ्रष्टाचार का महाजाल बिछाया है। इनका भ्रष्टाचार अब सर्वव्यापी बना है।

बोफोर्स तोप सौदे में 64 करोड़ रूपए की दलाली का मुद्दा कांग्रेस सरकार को मंहगा पड़ा था। 25 वर्ष बाद कांग्रेस सरकार की मिलीभगत से हुए घोटालों की अनुमानतया राशि अकल्पनीय है। राष्ट्रमण्डल खेलों में 76 हजार करोड़ रुपए के घोटाले के बाद लगता था कि इसके बाद कोई भी इतना बड़ा घोटाला नहीं कर पाएगा। लेकिन 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले में भी एक लाख छिहत्तर हजार करोड़ के घोटाले की राशि सामने आई है। पिछले दिनों सीएजी की रिपोर्टों के अनुसार पॉवर, कोयला और नागर विमानन क्षेत्र में कुल मिलाकर तीन लाख अस्सी हजार करोड़ के घोटाले सामने आए जिसमें पूरे देश को चौंका दिया है। लोग मानते हैं कि अभी न जाने कितने और ऐसे ही भयंकर घोटाले सामने आने वाले हैं। कांग्रेस के

एक वरिष्ठ मंत्री को लगता है कि बोफोर्स सौदे की तरह जनता इन घोटालों को भी भूल जाएगी। उन्हें लगता है कि हम पाप करेंगे और लोग भूलेंगे, और हमें नए पाप करने का फिर से मौका मिलेगा। कांग्रेसी इस गलतफहमी में न रहें। तब भी जनता ने उन्हें सबक सिखाया था। इस बार भी जनता कांग्रेस को सबक सिखाने का फैसला कर चुकी है। बोफोर्स कांड ने राजीव गांधी की सरकार को भगाया, हर्षद मेहता 'सूटकेस' कांड ने राव सरकार को सत्ता से बाहर किया और अब बारी कोयले की दलाली में फंसे मनमोहन सरकार की छुट्टी करने की है।

मित्रों, 4 लाख करोड़ रूपए जो कांग्रेसियों ने भ्रष्टाचार में कमाए तथा 21 लाख करोड़ का जो कालाधन इन्होंने विदेशों में रखा है उसे मिलाएं तो 25 लाख करोड़ रूपए का यह महाभयंकर भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार की यह राशि अगर जनता के काम आती तो 5 करोड़ लोगों के घर बनते, पांच लाख गांवों में पीने का पानी पहुंचता, हजारों अस्पताल बनते, और देश के अ-संगठित मजदूरों को पेन्शन देना संभव हो पाता।

एक बात साफ है कि कांग्रेसी नेतृत्व में भ्रष्टाचार को रोकने की क्षमता नहीं बची है। खेत की बाड़ ही खेत को खाने लगी है। ऐसे में भाजपा को एनडीए के अपने सहयोगी दलों सहित अन्य सभी दलों को इस मुहिम में शामिल कर आगे बढ़ने की रणनीति पर काम करना है। हमें भ्रष्टाचार के विरुद्ध 'महासंग्राम' और तेज करना है। मैं सभी दलों, संगठनों, व्यक्तियों और विशेषकर नौजवानों से अपील करता हूं कि 'आइए, हम सब मिलकर कांग्रेस के भ्रष्टाचारी शासन से भारत को मुक्त करने के मिशन में जुट जाएं।'

गलत आर्थिक नीतियां और कुशासन

इसी भ्रष्टाचार के कारण जनता में एक हताशा का वातावरण है। आर्थिक और सामाजिक मोर्चो पर जो बिखराव दिखाई दे रहा है वह भी इसी का नतीजा है। जिस सरकार की कोई साख नहीं बच पायी, वह निवेशकों को किस तरह आकर्षित कर पाएंगी? इतनी भ्रष्ट व्यवस्था के चलते भारत में पूंजी लगाने की सोच रहे विदेशी निवेशक अन्य देशों में जा रहे हैं, और अब तो भारतीय निवेशक भी देश के बाहर अवसर तलाश रहे हैं।

सरकार ने रिटेल में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश सम्बन्धी नीति घोषित कर दी जबकि संसद के दोनों सदनों में 7 दिसम्बर, 2011 को तत्कालीन वित्त मंत्री एवं वर्तमान राष्ट्रपति श्री प्रणव मुकर्जी ने आश्वस्त किया था कि 'सम्बन्धित फैसला लेने से पहले सभी stakeholders को जिसमें राजनीतिक दल और राज्य सरकारें भी शामिल हैं, से विचार-विमर्श कर, आम सहमति बनाकर इसे लागू किया जाएगा।' संसद की वाणिज्य सम्बन्धी स्थायी समिति ने भी रिटेल में FDI को लागू न करने की सिफारिश की थी। यह संसदीय लोकतंत्र पर आघात है। एनडीए शासन में संसद में हुई सम्बन्धित बहस पर कांग्रेस ने खुलकर इसका विरोध किया था। देश जानना चाहता है कि अचानक कांग्रेस का हृदय परिवर्तन कैसे हुआ?

आर्थिक सुधार मात्र राजनीतिक हथकण्डा नहीं अपितु राष्ट्रीय एजेण्डा है। उसे लागू करने के लिए राष्ट्रीय सहमति होना आवश्यक है, जैसाकि एनडीए सरकार में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में इन्हें लागू किया गया। वर्तमान सरकार ने अपने वायदे के मुताबिक न तो राष्ट्रीय सहमति बनाने की कोशिश की और न ही जनता के हितों का ध्यान रखा। जनादेश गंवा चुकी, अपने सहयोगी दलों का समर्थन खो रही कांग्रेस सरकार के पास आर्थिक सुधारों को लागू करने का न तो जनादेश है और न ही इच्छाशक्ति। कांग्रेस की आर्थिक सुधार सम्बन्धी घोषणाएं किसी लाचार व्यक्ति की आत्मसमर्पण करने की दयनीय स्थिति को ज्यादा दर्शाती हैं। सरकार की इस मनमानी घोषणा के विरोध में गत 20 सितम्बर को अप्रत्याशित 'भारत बंद' ने साफ कर दिया कि देश के खुदरा व्यापार को तबाह करने वाले विदेशी प्रत्यक्ष निवेश और महंगाई के विरोध में देश उबल रहा है। इस अवसर पर लोगों की सहभागिता, उनके इसी उबलते आक्रोश की अभिव्यक्ति है।

महंगाई के कारण आत्महत्याएं

महंगाई के बारे में अपनी चुनावी वायदे को तोड़ते हुए इस सरकार ने महंगाई बढ़ाकर आम आदमी पर लगातार प्रहार किए है। कांग्रेस की नई घोषणा वाकई में ''कांग्रेस का हाथ, आम आदमी पर घात'' यह होनी चाहिए। डीजल के दाम बढ़ाने के बाद विगत दिनों देशभर में तीन आत्महत्याएं हुई हैं और आत्महत्या करने वालों ने महंगाई का कारण देकर खुदकुशी की है।

खेती और किसानों की भयावह स्थिति

किसानों के बारे में यूपीए की संवेदनहीनता की नीति थमती नहीं दिखती। किसान परिश्रम कर रहा है और यह सरकार खेती से खिलवाड़ कर रही है। खाद, बीज, कीटनाशक इत्यादि सभी चीजें महंगी हो रही हैं। महंगी कीमत देकर खाद खरीदने के लिए मजबूर किसान को खाद की तंगी ने हैरान किया है। यह उल्लेखनीय है कि पिछले आठ सालों में खाद की कीमत चार गुना बढ़ी है जबकि किसानों को अपनी उपज का उचित दाम नहीं मिल रहा है।

बाढ़ का प्रकोप

मित्रों, पूर्वोत्तर में; विशेषकर अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम

और असम में बाढ़ के कारण काफी तबाही हुई है। हमारी मांग है कि वहां पर उखड़ गए रास्तों और पुलों की तुरंत मरम्मत की जाएं और प्रभावित लोगों का पुनर्वास किया जाए।

भाजपा मुख्यमंत्रियों का सम्मेलन

देश की वर्तमान आर्थिक स्थिति के संदर्भ में गत 18 अगस्त, 2012 को हमने सभी भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों का सम्मेलन आयोजित किया था। इस सम्मेलन में देश की आर्थिक स्थिति का जायजा लिया गया और देश की सामाजिक - आर्थिक प्रगति के लिए इन राज्यों में हो रहे प्रयासों की समीक्षा की। हमने यह पाया है कि एनडीए सरकार ने एक मजबूत अर्थव्यवस्था यूपीए को सौंपी थी। मगर वित्तीय अनुशासन के पूर्ण अभाव के साथ आर्थिक कुप्रबन्धन तथा अनिर्णय के फलस्वरूप यूपीए ने इस सदी के प्रारम्भ की मजबूत आर्थिक स्थिति को पुन: 1991 की स्थिति में ला दिया। आज प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि पैसा पेड़ों पर नहीं लगता, मनमोहनजी देश की जनता इस तथ्य को जानती है मगर इस जनता ने अपने परिश्रम से जो मजबूत अर्थव्यवस्था खड़ी की थी उसका बंटाधार करने का अधिकार आपको किसने दिया? भाजपा देशवासियों को आश्वस्त करना चाहती है कि हम ऐसे आर्थिक सुधारों के लिए प्रतिबद्ध हैं जो भारत की जनता के सभी वर्गों - गांव, गरीब, मजदूर किसान, नौजवानों के हितों की चिंता करते हैं। सुधार सम्बन्धी हमारी नीति किन्हीं मुट्ठीभर लोगों को फायदा पहुंचाने की नहीं, देश के सभी वर्गों के अधिकतम लाभ से जुड़ी है।

संघीय ढांचे पर हमले

मित्रों, मैं इसी संदर्भ में यूपीए द्वारा देश के संघीय ढांचे पर हो रहे हमलों की भी चर्चा करूंगा। राज्यों के अधिकारों पर कई बार अतिक्रमण होता रहा है। केन्द्र सरकार राज्यों की विशिष्ट परिस्थितियों की सरासर अनदेखी करते हुए उन पर चीजों को थोप रही है। इस तरीके से दिल्ली की सोच राज्यों पर थोपी नहीं जा सकती। साथ ही भाजपा - एनडीए शासित राज्यों के साथ सौतले व्यवहार की यूपीए की परम्परा अभी भी जारी है। भाजपा-एनडीए सरकारों द्वारा विधान मंडलों में पारित बिल अटकाए रखने के लिए राज्यपाल जैसी संवैधानिक संस्था का दुरूपयोग और निधि उपलब्ध कराने में देरी से लेकर गेहूं की बोरियां देने में अंड़गेबाजी तक कितने सारे हथकंडे इन्होंने अपनाए है। मुझे यह कहते हुए खुशी है कि यूपीए की अड़ंगेबाजी के बावजूद मध्यप्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों ने षि विकास दर को बढ़ाने में अभूतपूर्व सफलता हासिल की है। जब देश की प्रगति का इंजन राज्य बन रहे हैं तब यह अफसोस है कि केन्द्र रोड़े अटका रहा है।

बंगलादेशी घुसपैठ

मित्रों, देश के अंदर राजनीतिक बिखराव का परिणाम सामाजिक सरोकारों पर भी हो रहा है। विदेशी ताकतें भी इस स्थिति में हमें आंख दिखाने लगी हैं। बंगलादेशी घुसपैठियों के कारण असम में जो तनाव बना और उसके परिणामस्वरूप मुंबई, पुणे, लखनऊ इत्यादि शहरों में जो हुआ वह केन्द्र सरकार को शर्मसार करने वाला है। असम में स्थानीय बोडो समाज और बंगलादेश से आए अवैध घुसपैठियों के बीच के संघर्ष की बात नई नहीं है। अक्तूबर 1993 में इसी तरह के संघर्ष में 50 लोगों के मौत हुई थी जबकि जुलाई 1994, मई 1996 तथा सितम्बर 1998 में भी इसी तरह की वारदातों में दर्जनों ने अपनी जान गंवाई। मगर सरकार इस समस्या के विषय में हाथ पर हाथ धरे बैठी हुई है। एनडीए के कार्यकारी अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने असम दौरे के दौरान कहा था कि यह संघर्ष साम्प्रदायिक नहीं, भारतीयों और विदेशियों के बीच है।

हम जानते हैं कि असम में महात्मा शंकर देव के वैष्णव प्रार्थना मंदिर 'सत्र' के नाम से जाने जाते हैं। इन सत्रों की रचना असम की श्रेष्ठ आध्यात्मिक परम्परा का प्रतीक है। पूरे प्रदेश के कुल 910 सत्रों में से 39 सत्रों की लगभग सात हजार बीघा जमीन पर घुसपैठियों ने कब्जा कर लिया है। गुवाहाटी उच्च न्यायालय के 1997 के आदेश के बावजूद विगत 15 सालों में इस जमीन को छुड़वाने के लिए राज्य सरकार ने किसी भी तरह के प्रयास नहीं किए हैं।

घुसपैठियों के कारण न केवल प्रदेश की जनसंख्या का स्वरूप बदल रहा है, बल्कि इनके अतिक्रमण के कारण वन क्षेत्र भी सिकुड़ता जा रहा है। पशुओं का चारा क्षेत्र, आदिवासियों को जमीन के पट्टे, नदी प्रवाह के अंदर बनी चार-भूमि के हिस्से आदि सभी जगह आज घुसपैठियों का अतिक्रमण बे-रोकटोक जारी है। इस संदर्भ में केन्द्रीय चुनाव आयुक्त श्री एच.एस. ब्रह्मा द्वारा जानकार सूत्रों के हवाले से की गई यह टिप्पणी महत्वपूर्ण है कि सन् 2011 की जनगणना आंकड़े आने के बाद असम के 27 में से 11 जिले घुसपैठियों के कारण मुस्लिम बहुल हो जायेंगे।

मैं इस मंच से असम सरकार से पुरजोर अपील कर रहा हूं कि घुसपैठियों के कारण बे-दखल हो रहे आदिवासी-वनवासियों को उनके जमीन के पट्टे शीघ्रातिशीघ्र हस्तांतरित किए जाएं। आदिवासी-वनवासियों के जीवनयापन के साधन छीनकर अपने वोट बैंक को सुरक्षित करने के लिए तरूण गोगोई सरकार घुसपैठियों को पूरी सुरक्षा दे रही है और यह हमें कतई स्वीकार नहीं है। बंगलादेशी घुसपेठियों की

समस्या असम और पूर्वोत्तर भारत तक सीमित नहीं है। यह समस्या कांग्रेस ने अपनी वोट बैंक में 'फॉरेन डायरेक्ट इनवेस्टमेंट' के रूप में बढ़ने दी। अब उसका स्वरूप अति-विकराल होता जा रहा है। विगत् लगभग तीस सालों से हम अवैध बंगलादेशी घुसपैठियों की समस्या के बारे में सरकारों को चेतावनी दे रहे हैं मगर हमारी बात को सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया।

आज भी हम इसे फिर से दोहरा रहे हैं कि अगर घुसपैठियों की समस्या की गंभीरता ध्यान में लेकर कार्रवाई नहीं की जाती तो असम में बढ़ रहा तनाव पूरे पूर्वोत्तर भारत में और फिर समूचे देश में भयावह स्थिति पैदा कर सकता है। मैं, यूपीए के नेताओं को आगाह करता हूं कि वोट बैंक के मोह से बाहर निकलकर घुसपैठ रोकने के लिये कारगर उपाय करें।

मैं यहां बताना चाहूंगा कि जब अटलजी की सरकार थी तब प्राथमिकता के तौर पर जम्मू कश्मीर सीमा पर कंटीले तारों की बाड़ (फेंसिंग) लगाई गयी और उसी के चलते आज वहां घुसपैठ काफी कम हुई है। पूर्वोत्तर भारत में हमारे यह प्रयास समयाभाव में पूरे नहीं हो पाए। मेरा सरकार से आग्रह है कि वह तुंरत 'फेंसिंग' पूरा करे, घुसपैठियों को देश के बाहर निकालने की व्यवस्था करे और नया 'नेशनल सिटिजनशिप रजिस्टर' बनाते हुए असम समझौते को शत प्रतिशत अमल में लाएं।

इस संदर्भ में मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि पूर्वोत्तर भारत के विद्यार्थियों-युवाओं में जब भय और आतंक फैलाया गया था तब भाजपा की स्थानीय इकाईयों और पार्टी के 'नार्थ-ईस्ट सम्पर्क प्रकोष्ठ' के कार्यकर्त्ताओं ने उनसे सम्पर्क स्थापित किया और उन्हें आश्वस्त किया। हमारा 'नार्थ-ईस्ट सम्पर्क प्रकोष्ठ' आज भी कुछ शहरों में 'हेल्पलाइन' के द्वारा काम कर रहा है। हमने इस विषय की गंभीरता को देखते हुए कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री श्री आर. अशोक के नेतृत्व में एक सद्भावना प्रतिनिधिमण्डल पूर्वोत्तर भी भेजा था। इस दल के सदस्यों ने गुवाहाटी, दीमापुर तथा शिलांग में जाकर विद्यार्थियों-युवाओं को पुनः वापस आने का अनुरोध किया। पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों-युवाओं में विश्वास बहाली के लिए श्री आर. अशोक तथा उनके प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने जो कार्य किया उसके लिए मैं उनका हृदय से अभिनंदन करता हूं। राष्ट्रवाद से प्रेरित कार्यकर्त्ता जब सत्ता में रहते हैं, तो उसका यह परिणाम होता है।

सुरक्षा की चुनौतियां

केन्द्र में एक कमजोर, भ्रष्ट और दिशाहीन सरकार की एक दृढ़ एवं सुदीर्घ नीति और प्रबल इच्छाशक्ति के अभाव में देश की सुरक्षा के सम्मुख भी गंभीर चुनौतियां खड़ी होती जा रही हैं। गत् 8 सितम्बर, 2012 को देश के पुलिस महानिदेशकों की वार्षिक बैठक में प्रधानमंत्री ने स्वयं ऐसी चुनौतियों को रेखांकित किया है। जातीय हिंसा, माओवादी खतरा, जम्मू एवं कश्मीर की स्थिति, तटवर्ती क्षेत्रों से पाकिस्तानी एजेंसियों द्वारा फैलाया जा रहा आतंकवाद और साइबर सुरक्षा। भाजपा का मत है कि राष्ट्रीय सुरक्षा को मिलने वाली प्रत्येक चुनौती का सख्ती से मुकाबला करने की आवश्यकता है। हाल ही मे कर्नाटक पुलिस नें आतंकवादियों का बड़ा षड्यंत्र उजागर किया। कश्मीर में लगातार हो रही बेगुनाह सरपंचों की हत्याएं आतंकवाद के संकट की गंभीरता दर्शाती हैं।

पूर्वोत्तर भारत में एनडीए की सरकार के रहते नागा सोशलिस्ट काऊन्सिल के दो खेमों के साथ वार्ता हुई और शांति स्थापित की गई। मगर उसके बाद यूपीए ने कुछ भी नहीं किया। भाजपा का आग्रह है कि नागा समस्या का यथाशीघ्र राजनीतिक समाधान ढूंढने के प्रयास तेज किए जाएं।

राष्ट्रीय सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। इस सम्बन्ध में सरकार के हर वैधानिक और न्यायोचित कदम का हम समर्थन करेंगे। मगर देश की जनता को यह भी जानने का अधिकार है कि यूपीए सरकार इन चुनौतियों का सामना करने में क्यों नहीं सफल हो पा रही?

जम्मू-कश्मीर रिपोर्ट: 'विभाजन का घोषणापत्र'

राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा एक और संवदेनशील मुद्दा है- जम्मू एवं कश्मीर का। हालांकि वहां ऊपरी तौर पर हालात सामान्य होते दिखाई देते हैं मगर अंदर ही अंदर भारत का नंदनवन बारूद के ढ़ेर पर बैठा है। भारत विरोधी, अलगाववादी तत्व जब चाहें जम्मू-कश्मीर को 'बंधक' बना लेते हैं। केन्द्र की कांग्रेसी सरकारों ने इस समस्या से सख्ती से निपटने के बजाय सदैव अलगाववादियों की खुशामद करने का काम किया है। इन्हीं प्रयासों की कड़ी में केन्द्र सरकार द्वारा तीन सदस्यीय वार्त्ताकारों की समिति गठित की। उसकी रिपोर्ट सार्वजनिक रूप से जारी हो चुकी है। यह रिपोर्ट भारत विरोधी शक्तियों एवं अलगाववादी तत्वों के इरादों की अभिव्यक्ति ज्यादा लगती है। यह भारत के एक और 'विभाजन का घोषणापत्र' जैसा है। अमेरिका में गिरफ्तार किए गए आई. एस.आई. एजेंट की 'कृपा का आनन्द' उठाने वाले इन वार्ताकारों से और क्या उम्मीद की जा सकती है? जम्मू-कश्मीर की राष्ट्रभक्त जनता और पूरे देशवासियों ने इस रिपोर्ट को पहले से ही कूड़ेदान में डालने योग्य समझा है। केन्द्र सरकार भी यह तथ्य जितना जल्दी समझ ले, उतना बेहतर रहेगा।

भारतीय जनता पार्टी और अन्यान्य राष्ट्रवादी संगठनों ने इस भारत विरोधी रिपोर्ट के विरुद्ध देशभर में अभियान चलाकर जनमत को शिक्षित करने हेतु प्रशंसात्मक सार्थक प्रयास किया है। भाजपा सरकार से मांग करती है कि वह इस रिपोर्ट को तुरंत रद्द करने की घोषणा कर जनभावनाओं का सम्मान करे। भाजपा जम्मू-कश्मीर के राष्ट्रभक्त लोगों के साथ कंधा मिलाकर खड़ी है। भारतीय जनसंघ के संस्थापक और प्रखर राष्ट्रभक्त डा. श्यामा प्रसाद मुकर्जी के बलिदान के चलते आज जम्मू-कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है। हम संकल्प करते हैं कि डा॰ मुकर्जी के बलिदान को व्यर्थ नहीं जाने देंगे।

तेलंगाना

तेलंगाना का विषय कांग्रेस का वहां की जनता के साथ लगातार विश्वासघात का प्रतीक है। वहां पर आर्थिक प्रगति पूरी तरह रूक गई है। हम तेलंगाना के विषय पर पूरी तरह वहां की जनता के साथ हैं। संसद में हमने यह विषय कई बार उठाया है। संसद के बाहर भी हम वर्षों से सक्रिय हैं। व्यापक जनदवाब के बावजूद कांग्रेस अपने अड़ियल रवैये को छोड़ती नहीं दिखती। मैं तेलंगाना की जनता को बताना चाहता हूं कि जब भाजपा सत्ता में आएगी तो तेलंगाना राज्य निश्चित रूप में बनेगा।

पाकिस्तान से आए हिन्दू

मित्रों, अब मैं पड़ोसी देश पाकिस्तान से सांप्रदायिक उत्पीड़न के कारण भारत में आ रहे हिन्दुओं के विषय में आपसे कुछ बात करना चाहूंगा। कुछ सप्ताह पहले से पाकिस्तान से सैंकड़ों हिन्दू राजस्थान और पंजाब में आ रहे हैं। इनमें सिंधी समाज के बंधु बड़ी संख्या में हैं। पाकिस्तान के सिंध और बलुचिस्तान प्रांतों में हर महीने दर्जनों हिन्दू युवतियों को उठाया जा रहा है और जोर जबरदस्ती से उनका धर्मान्तरण किया जा रहा है। धार्मिक असहिष्णुता की शिकार बनकर पाकिस्तान से भारत में आए ऐसे हजारों हिन्दू हैं जो देश के कई भागों में रोजी-रोटी की तलाश में हैं। एक ओर लाखों बंगलादेशी खुलेआम भारत में आकर देश के वोट बैंक में अपने राजनीतिक समर्थन की पूंजी जमाकर आराम से बस रहे हैं तो दूसरी ओर पाकिस्तान और अन्य पड़ोसी देशों से भगाए गए हिन्दुओं को अपनी पितृभूमि में न कोई सुविधा मिल रही है, न कोई सुरक्षा।

भाजपा की मांग है कि भारत सरकार पड़ोसी देशों से खदेड़े गए हिन्दू शरणार्थियों के लिए, चाहे वो पाकिस्तान से आए हुए सिंधी या बंगलादेश से भगाए गए बंगाली हो -के हित रक्षा की नीति बनाएं तथा संरचना खड़ी करें। इसी तरह श्रीलंका से आए तमिल शरणार्थियों के हित की भी रक्षा करनी चाहिए।

गुजरात और हिमाचल चुनाव

मित्रों, आने वाले सौ दिनों के भीतर गुजरात और हिमाचल प्रदेश में जनता को फिर से अपना जनादेश देने का अवसर मिलेगा। आज इन दोनों ही प्रदेशों में भारतीय जनता पार्टी की सरकारें हैं। कोई भी चुनाव, किसी भी सरकार और राजनीतिक दलों के कामकाज को कसौटी पर कसने का अवसर होता है। मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि गुजरात में श्री नरेन्द्र मोदी और हिमाचल प्रदेश में प्रोफेसर प्रेम कुमार धूमल के नेतृत्ववाली सरकारों ने विकास, प्रगति, समृद्धि और सामाजिक न्याय के नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर सुशासन का उत्तम और अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। जनता के सामने जाते हुए हम विनम्रतापूर्वक यह दावा कर सकते हैं कि हमने जो कहा और वायदे किए, उन्हें हमने न केवल पूरा किया है अपितु कई मामलों में उससे भी आगे जाकर काम किया है।

गुजरात और हिमाचल के बाद पूर्वोत्तर भारत-त्रिपुरा, नागालैंड और मेघालय में भी चुनाव होने हैं। हमारी दृष्टि से सभी राज्यों के चुनाव अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। जहां हम सत्ता में हैं वहां जनादेश पुनः प्राप्त करना और जहां सत्ता में नहीं हैं वहां सत्ता में आने की कोशिश करना-हम सबका दायित्व है। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि राज्यों की राजनीति देश की राजनीति को प्रभावित करती है।

हमारा दायित्व

इन सारी परिस्थितियों में देश की जनता की निगाहें हमारे उपर टिकी हुई हैं। इसका मुख्य कारण है यूपीए सरकार से मोहभंग और भाजपा-एनडीए सरकारों की शानदार उपलब्धियां। स्वास्थ्य, शिक्षा, निवेश के लिये अनुकूल वातावरण, महिला सशक्तिकरण, पारदर्शी शासनतंत्र इत्यादि कई विषयों में भाजपा की सरकारें अन्य दलों की सरकारों से बेहतर कार्य कर रही हैं। कर्नाटक सरकार ने आर्थिक सुधारों के विषय में सराहनीय कार्य किया है। गोवा में हमारी सरकार ने कन्या शिक्षा एवं स्वावलंबन के लिए अनोखी योजना अपनाई है। छत्तीसगढ़ सरकार ने सूचना प्रौद्योगिकी के मोर्चे पर सराहनीय सफलता पायी है। हिमाचल प्रदेश ने 'अटल बिजली बचत योजना' के तहत करोड़ों रूपयों की राशि बचायी है। जबकि मध्यप्रदेश सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना करते हुए ऐतिहासिक कदम उठाया है। झारखण्ड सरकार की 'दाल-भात योजना' से गरीबों को राहत मिली है। गुजरात ने 'सौर ऊर्जा' के विषय में ऐतिहासिक कार्य किया है। बिहार और पंजाब में भी सरकार में जो हमारे प्रतिनिधि हैं, बेहतर शासन के लिए अपना अच्छा

योगदान दे रहे हैं।

मित्रों, पार्टी के अंदर बने नीति निर्धारण एवं कार्य समूह ने अब मछुआरों के संदर्भ में एक नीति बनाई है। साथ ही पार्टी के अंदर एक 'नीति शोध केन्द्र' स्थापित हुआ है। वहां पर नीतिगत मामलों पर शोध कार्य प्रारंभ हुआ है। इस केन्द्र के शोधकर्ताओं ने पाया कि भाजपा तथा एनडीए शासित राज्यों में बेरोजगारी का प्रतिशत कम होता जा रहा है। निरक्षर लोगों को साक्षर बनाने के प्रयास भी भाजपा एनडीए शासित राज्यों में अच्छी तरह सफल हो रहे हैं। हमें इस तथ्य का अहसास रहे कि भाजपा शासित राज्यों में गरीबी रेखा के नीचे वाले समूह पहले से ही अधिक संख्या में रहे हैं और विकास के संदर्भ में चुनौतियां भी अधिक हैं।

उपलब्धियों को जनता तक ले जाना

मित्रों, सरकारों की 'परफॉमेन्स' अच्छी होना महत्वपूर्ण है मगर केवल उतना ही पर्याप्त नहीं है। हमारी सरकारों के अच्छे कार्य जनता तक उतने ही कारगर तरीके से पहुंचाना भी अति आवश्यक है। इसलिए हमें चाहिए कि हम अपनी उपलब्धियां जानें, उन्हें ठीक से पहचानें तथा उनको जनता तक ले जाएं। जनता राजनीतिक दलों से जुडना चाहती है और हमें राजनीतिक दल के नाते बहुत कुशलता से जनता के साथ संवाद स्थापित करने में, और सफलता पानी चाहिए। हमें तीन बातों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। पहला, लोगों को ठीक से भाजपा की नीतियां और भविष्य का विज़न बताना, दूसरा, एक दल के रूप में हमारी विशेषताएं तथा हमारी सरकारों की सफलताएं बताना और तीसरा उनके दु:ख, दर्द, पीड़ा और उनके सपने समझ लेना। हमारा जनसंपर्क इस पद्धति से होना चाहिए। सभी सम-सामयिक विषयों पर हमें पार्टी की नीति और पार्टी के रूख के बारे में जानकारी होनी चाहिए। हमें निरंतर इस तथ्य का अहसास होना चाहिए कि समाज की 'सज्जन शक्ति' भाजपा से काफी उम्मीदें रखती हैं। इस सज्जन शक्ति के साथ अगर हमारा निरंतर संवाद रहता हैं, तो ही हम उनका समर्थन जुटा पायेंगे।

प्रतिनिधि भाईयों और बहनों, विगत कुछ महीनों में पार्टी संगठन को और सक्रिय बनाने के लिए हमने अनेकों गतिविधियां चलाई हैं। प्रशिक्षण हमारी आस्था और आग्रह का विषय है। मुझे यह बताते हुए आनंद हो रहा है कि इस साल अंडमान, लद्दाख और अरूणाचल जैसे सुदूर प्रांतों में भी प्रशिक्षण की ज्ञानगंगा पहुंच पायी है। हमारा इंटरनेट टी.वी. ''युवा टी.वी.'' भी प्रगति कर रहा है। आने वाली 1 दिसम्बर से हम पार्टी के पोर्टल से ई-लर्निंग के माध्यम से प्रशिक्षण के पाठ पढ़ाना भी प्रारंभ करेंगे।

मित्रों, समाज के विभिन्न समूहों से जुड़कर उनका विश्वास जीतने करने के सक्रिय प्रयास विभिन्न प्रकोष्ठों तथा मोर्चो द्वार कारगर ढंग से हो रहे हैं। 'भारतीय जनता मजदूर महासंघ' ने अ-संगठित क्षेत्र के कामगारों के बीच अच्छा नेटवर्क खड़ा किया है। हाल ही में उनके द्वारा एक विशाल सम्मेलन दिल्ली में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। मछुआरा प्रकोष्ठ, पंचायती राज प्रकोष्ठ, डॉक्टर्स प्रकोष्ठ, बुनकर तथा कारीगर प्रकोष्ठ, महिला मोर्चा, अल्पसंख्यक मोर्चा इसी तरह सक्रिय हैं। पार्टी के सु-शासन प्रकोष्ठ के द्वारा अल्पसंख्यक मोर्चे के सहयोग से वक्फ बोर्डो और हज कमेटियों के मनोनीत सदस्यों की कार्यशाला हाल ही में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। आने वाले सप्ताह में हम देश के सभी भाजपा शासित राज्यों के स्वास्थ्य मंत्रियों की एक बैठक केवल मात्र कुपोषण तथा शिशु एवं मातृ - मृत्यु दर रोकने के एजेंडे पर चर्चा हेतु बुला रहे हैं।

मित्रों, हमें इस बात का अहसास होना चाहिए कि भारतीय जनता पार्टी अब मात्र Party of Opposition की भूमिका में नहीं है, हमें Party of Governance के रूप के रूप में भी सोचना चाहिए। जब हम Good Governance की बात करते हैं तो हम सामाजिक न्याय और सौहार्द (Harmony) की भी बात करते हैं। समाज के वंचित वर्गो, ग्रामवासियों, किसानों तथा अभाव व अन्याय से पीड़ित क्षेत्रों के विकास की प्राथमिकता यही अंत्योदय केन्द्रित गवर्नेन्स का मतलब है। यह साध्य करने के लिए हम आधुनिक तकनीकी का, नई अर्थनीति का, सरंचना-विकास का और प्रबंधन विज्ञान का उपयोग करना चाहते हैं। वंचितों के विकास का रिश्ता हम उभरते भारत की आकांक्षा से जोड़ना चाहते हैं।

इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए हम एक वृहद विज़न डॉक्युमेंट बना रहे हैं। इस विज़न डॉक्युमेंट का प्रारूप हम 25 दिसम्बर - श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस पर, जोकि हमने राष्ट्रीय सु-शासन दिवस के रूप में मनाना प्रारंभ किया है, जनता के सम्मुख लाएंगे।

मैं 1967 के भारतीय जनसंघ के अधिवेशन में पंडित दीनदयालजी उपाध्याय द्वारा दिए गए भाषण का स्मरण कराना चाहता हूं। उस भाषण में उन्होंने गरीबी के खिलाफ लड़ाई की घोषणा की थी। गरीबी के खिलाफ यह लड़ाई आज भी जारी है। और इस युद्ध में हमें पूर्ण विजय से कम कुछ भी मंजूर नहीं है।

मित्रों, इसलिए उभरते भारत के लिए हम सु-शासन के द्वारा समानता और सामाजिक सौहार्द के आधार पर विकास की राजनीति का कार्यक्रम विकसित कर रहे हैं। धर्म, पंथ,

जाति या भाषा तथा लिंग के आधार पर किसी भी तरह के भेदभाव को नकारना इस कार्यक्रम की आधारशिला है। इस कार्यक्रम के दस बुनियादी सूत्र मैं यहां रख रहा हूं। यह सूत्र इस प्रकार हैं –

1. ई-गवर्नेन्स (e-governance) द्वारा सु-शासन (Good Governance) पर जोर और ई-नीलामी (e-auction) जैसी तकनीक का उपयोग करते हुए प्रामाणिक, पारदर्शी और भ्रष्टाचार मुक्त सरकार।
2. कृषि को वर्तमान संकट से मुक्त करने हेतु कृषि क्षेत्र में ''आधारभूत संरचना'' निर्माण का एक विस्तृत महत्वाकांक्षी कार्यक्रम।
3. किसानों के उत्पादन के मूल्य के संदर्भ में लागत पर 50 प्रतिशत लाभांश के स्वामीनाथन कमेटी के सुझाव पर अमल।
4. देश के जल संसाधन हेतु Reduce, Recycle & Reuse के मंत्र पर आधारित 'राष्ट्रीय जल मिशन' का निर्माण। इस मिशन के द्वारा देश में पीने के लिए, कृषि तथा उद्योगों के लिए लगने वाली पानी की हर आवश्यकता को पूरा करने के लिए महत्वाकांक्षी कार्यक्रम।
5. देश के प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग तथा प्रबंधन के Ecology, Economy & Ethics के सिद्धांतों पर आधारित नीतियों का निर्माण।
6. देश की आयातित ईंधन पर निर्भरता कम करने हेतु सौर उर्जा तथा अन्य वैकल्पिक उर्जा स्रोतों को विकसित करने के लिए एक समयबद्ध कार्यक्रम।
7. गरीब, किसान, मजूदर, सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित तथा असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले हर व्यक्ति को उच्च गुणवत्ता वाली सस्ती, सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने हेतु स्वास्थ्य सेवाओं के विकास की व्यापक योजना।
8. देश में हर साल 1.2 करोड़ रोजगार उपलब्ध कराने की चुनौतीपूर्ण आवश्यकता को पूरा करने के लिए देश में विनिर्माण क्षेत्र (Manufacturing Sector) का पुनरूद्धार।
9. असंगठित क्षेत्रों के मजदूरों, कारीगरों एवं बुनकरों के हितों के रक्षा के लिए अल्पसंख्यक आयोग तथा महिला आयोग की तर्ज पर एक स्वतंत्र संवैधानिक रचना के तहत आयोग का निर्माण।
10. देष में व्यापक पैमाने पर पांच लाख रूपयों से भी कम लागत वाले घरों के निर्माण की योजना।

स्वामी विवेकानंदजी की 150वीं जयंती

मित्रों, आगामी 12 जनवरी, 2013 से देशभर में स्वामी विवेकानंद की एक सौ पचासवीं जयंती मनाई जाएगी। स्वामी विवेकानन्द का तेजस्वी व्यक्तित्व और ओजस्वी उद्बोधन हमें अपनी भारत माता के कष्टों को दूर करने का आह्वान आज भी करता है। उनका संन्यास, संसार में मानवता के कष्टों, प्रकृति प्रदत्त गरीबी जैसी चुनौतियों पर विजय पाने का निमित्त था। उन्होंने भारत से गरीबी हटाने और लोगों की सेवा करने को, देवी-देवताओं की पूजा से ज्यादा पूज्य माना। ऐसे स्वामी विवेकानन्द हमारे प्रेरणा स्रोत हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित हिन्दुत्व का संदेश यानी मानवता के संदेश को लेकर हम देश के सुदूर कोनों और हर घर-घर तक पहुंचे, ऐसा मेरा अनुरोध है। शिकागो के अपने ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने धार्मिक कट्रता, असहिष्णुता और पंथाभिमान के कारण मनुष्य जाति के हुए नुकसान के बारे में कहा था। उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि अन्य धर्म झूठे हैं केवल मेरा ही धर्म श्रेष्ठ है। इस संदर्भ में पैगम्बर मोहम्मद साहब को अपमानित करने वाली विवादित फिल्म की हम निन्दा करते हैं। इस तरह किसी भी सम्प्रदाय के पूज्य व्यक्ति के बारे में दुर्भावना फैलाना गलत है।

आइए, स्वामीजी के प्रेरणादायी जीवन चरित्र का स्मरण करें; उठो, जागो और तब तक नहीं रूको जब तक लक्ष्य प्राप्ति न हो जाए। इस संदेश को हमें अक्षरश: आचरण में लाना चाहिए।

शंखनाद

मित्रों, जैसा मैंने शुरू में कहा कि हम इतिहास के एक नाजुक मोड़ पर मिल रहे हैं। भ्रष्टाचार से कांग्रेस को फुर्सत नहीं है। सरकार चलाना छोड़ उसके नेता देश के सार्वजनिक धन को लूट रहे हैं। एक अनिश्चितता का माहौल बन चुका है। आम आदमी अपने साथ हुए विश्वासघात से आहत है। दुनिया में भारत की साख घट रही है। ऐसे में हमें एक जिम्मेदार विपक्ष और जनता से जुड़े होने वाले एक राष्ट्रवादी दल के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। मगर यह जिम्मेदारी घर बैठे और लोगों के हमारे पास आने के इंतजार तक रूकी नहीं रह सकती। जनता के आक्रोश को हमें स्वर देना है। हमें उन तक पहुंचकर इस चुनौतीपूर्ण घड़ी में उनका विश्वास जीतना है। उनको संगठित कर आगे बढ़ना है।

मित्रों, देश की परिस्थिति कैसी भी हो हम निराश होकर नहीं बैठ सकते। महाभारत युद्ध की भूमि कुरूक्षेत्र के इस प्रदेश में अब एक बार फिर कांग्रेसी भ्रष्टाचार के विरुद्ध युद्ध का 'पांचजन्य' बज चुका है। अब हमारे पास बैठने का समय नहीं है। मैं आप सभी से आह्वान करता हूं कि 'आइए, हम यहां से भ्रष्टाचारी कांग्रेसी कुशासन का अंत करने के लिए 'दिल्ली कूच' करें।

वन्दे मातरम्! ■

संप्रग सरकार ने शासन करने का जनादेश खो दिया

सूरजकुंड (हरियाणा) में आयोजित भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय परिषद् बैठक में सर्वसम्मति से राजनीतिक प्रस्ताव पारित किया गया। इस प्रस्ताव को भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रविशंकर प्रसाद ने प्रस्तुत किया। इस प्रस्ताव में कहा गया कि कांग्रेसनीत संप्रग सरकार ने शासन करने का जनादेश स्पष्ट रूप से खो दिया है। प्रस्ताव में यह भी कहा गया कि जम्मू एवं कश्मीर में हाल के दिनों में सरपंचों की हत्या से जाहिर है कि राज्य में आतंकवाद एक बार फिर सिर उठा रहा है। प्रस्ताव में असम में बांग्लादेशी नागरिकों की घुसपैठ, मुम्बई में अमर जवान ज्योति पर हमला तथा उत्तर प्रदेश में पिछले दिनों भड़के साम्प्रदायिक दंगों पर भी चिंता जताई गई है। साथ ही संकल्प व्यक्त किया गया है कि कुरुक्षेत्र की भूमि में राष्ट्रीय परिषद् की इस बैठक में भाजपा अपने आपको राष्ट् के हित में समर्पित करती है और देश के लोगों को आश्वासन देती है कि सुशासन, समानता और शुचिता के साथ विकास और राष्ट्रवाद के अपने बेदाग रिकॉर्ड के आधार पर वह देश के गौरव को बहाल करेगी। प्रस्तुत है इस प्रस्ताव का पूरा पाठ :

कांग्रेसनीत संप्रग सरकार शासन करने का जनादेश खो चुकी है

भ्रष्टाचार में डूबी, आंतरिक विरोधाभास से घिरी, गठबंधन के कुप्रबंधन के दलदल में फंसी कांग्रेसनीत संप्रग सरकार ने शासन करने का जनादेश स्पष्ट रूप से खो दिया है। भ्रष्टाचार को दूर करने और विदेशों में जमा कालेधन को वापस लाने के लिए कांग्रेस नेतृत्व द्वारा बुराड़ी में उठाये जाने वाले कदमों के बारे में खोखली घोषणाएं की थी। प्रधानमंत्री ने अपने जोश में यह घोषणा की थी कि वह 2जी घोटाले की जांच करने वाली किसी भी संसदीय समिति के समक्ष पेश होंगे। ये सभी दावे हवाई साबित हुए। संसद में हुए अनेक बहस की परवाह न करते हुए कांग्रेस ने बेशर्मी से संलिप्त लोगों को बचाने की कोशिश की और भ्रष्टाचार के खिलाफ सीधी लड़ाई लड़ने के अपने दावे को खोखला साबित किया। आखिरकार, जब हमने जोर डाला तो गठबंधन दल का एक मंत्री ए राजा या मारन को सरकार से हटाना पड़ा। अब सरकार ने जनता का ध्यान भ्रष्टाचार से मिटाने के लिए हड़बड़ी में और विदेशी दबाव में कुछ फैसले किये हैं। जिन्हें आर्थिक सुधार का नकाब ओढ़ाकर गुमराह किया जा रहा है। ये सब उस दिन किया गया जब भाजपा और कई अन्य पार्टियों ने भारत बंद का आवाह्न किया था और शांतिपूर्वक ढंग से यह बताया था कि इस देश के लोग इस सरकार की नीतियों के विरुद्ध हैं। इससे पहले कभी भी भारत सरकार की विश्वसनीयता पर बार-बार प्रश्न-चिह्न नहीं लगाया गया था, जैसाकि अब हो रहा है। प्रधानमंत्री कार्यालय को कोर्ट द्वारा एक लिखित हलफनामा दाखिल करने के लिए कहा गया था।

कोयला-घोटाला: कांग्रेस का एक घोटाला

उदासीन, अकर्मण्य और निर्णय शक्ति में अक्षम सरकार का शासन भ्रष्ट ही नहीं लकवा ग्रस्त ही था। सरकार में अंतर्निहित विरोधाभासों के कारण कोई भी नीति संबंधी निर्णय नहीं लिए गए। दोहरा रवैया- डॉ. मनमोहन सिंह और श्रीमती सोनिया गांधी सरकार बनाम राष्ट्रीय सलाहकार परिषद कशमकश के साथ जारी रहा जिसके कारण निष्क्रियता और भ्रम पैदा हुआ। तथापि यह तो केवल शासन के बारे में था। वीभत्स पूंजीवाद, कालेधन और रिश्वत को बढ़ावा देना ये पूर्णतया एकमत था। अब यह बात कोयला आवंटन घोटाले से पूरी तरह से स्पष्ट है। इस घोटाले से राष्ट्र स्तब्ध रह गया है। 2004 में चुने जाने के तुरंत बाद कांग्रेसनीत संप्रग सरकार ने देश में विद्युत उत्पादन को तेजी से बढ़ाने के लिए कोयला ब्लॉकों के वितरण हेतु नीलामी प्रक्रिया लागू करने के प्रति

अपनी वचनबद्धता के बारे में घोषणा की थी। उचित कानून पारित कराने के बजाए प्रक्रिया निर्धारित करने में देरी की गई जिसके कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। यद्यपि कानून बनने और पारित होने में समय लगा, तथापि क्रियान्वित करने संबंधी नियम अभी तक नहीं बनाये गए हैं। इस संदेहास्पद स्थिति के चलते 142 कोयला ब्लॉक तुरंत आवंटित कर दिए गए जिनमें से अधिकांश कांग्रेस नेतृत्व के रिश्तेदारों को आवंटित किये गए। माना जाता है कि ये आवंटन उन मनपसंद लोगों को दिए गए जिन्होंने कांग्रेस खजानों में पैसा जमा किया। रसूख वाले और ताकतवर लोगों को हालांकि वे इस प्रयोजन के लिए अपात्र थे, लगभग नि:शुल्क कोल ब्लॉक आवंटित किये गये। कोयला ब्लॉक हासिल करने के बाद न तो उन्होंने वहां से कोयला निकाला और न ही विद्युत का उत्पादन किया। यह महसूस करते हुए कि उनकी कंपनियों के बाजार में दाम बढ़ गये हैं, रातोंरात गायब होने वाली इन कंपनियों ने अपने शेयर बेच डाले और भारी मुनाफा कमाया जो कैग के अनुमान के अनुसार 1.86 लाख करोड़ रुपये बैठता है। यद्यपि यह भ्रष्टाचार के वर्तमान युग में सबसे बड़ा घोटाला है तथापि राष्ट्रमंडल घोटाला जो सबसे छोटा घोटाला था, में 70 हजार करोड़ रुपये की राशि शामिल थी। उसके बाद 2जी स्पैक्ट्रम घोटाला हुआ जिसके कारण राष्ट्रीय खजाने को 1.76 लाख करोड़ रुपये का घाटा हुआ। एयर इंडिया के लिए वायुयान की खरीद के कारण हुई हानि, दिल्ली एयरपोर्ट के विकास करने वाली कंपनी को आवंटित की गई प्राइम लैंड संबंधी घोटाले की जांच होनी अभी बांकी है। इन सभी में कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी की पार्टी द्वारा घोटालों से घिरी सरकार चलाए जाने पर उनकी चुप्पी आश्चर्यजनक है। बुराड़ी में उनके द्वारा की गई बड़ी-बड़ी घोषणाएं कांग्रेस-शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों को भ्रष्टाचार दूर करने के लिए कदम उठाने के बारे में उनकी घोषणाएं कहां गई? अब सार्वजनिक तौर पर आरोप लगाये गये हैं जिनसे उनके राजनीतिक सहायक एवं वरिष्ठ मंत्रियों द्वारा प्रधानमंत्री को कोयला ब्लॉकों के आवंटन के लिए नाम सुझाये जाने पर सन्देह की सुई उनकी ओर जाती है। राष्ट्र इन आरोपों के उत्तर जानना चाहता है।

विश्वसनीयता समाप्त हो गई, नेतृत्व बिखर गया

इस संबंधित अवधि के दौरान प्रधानमंत्री कोयला मंत्रालय का भार सम्भाले हुए थे। प्रधानमंत्री प्रत्यक्ष रूप से, राजनीतिक रूप से और नैतिक रूप से इन संदेहास्पद आवंटनों के लिए उत्तरदायी हैं। इसलिए भाजपा यह मांग करती है कि उन्हें त्यागपत्र दे देना चाहिए। यदि 2जी स्पैक्ट्रम घोटाले में प्रधानमंत्री अप्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी हैं तो कोयला घोटाले में भी वह अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेवार हैं और कोई भी व्यक्ति इस बारे में दोहरा मानदंड नहीं अपना सकता। नेतृत्व की साख धीरे-धीरे कुछ समय से समाप्त हो रही है। जबसे प्रधानमंत्री ने संसद में दिए अपने आश्वासन के बावजूद शुंगलू समिति की रिपोर्ट पर कोई कार्रवाई नहीं की। कांग्रेसनीत संप्रग सरकार आधा सच बताकर राष्ट्र को गुमराह कर रही है। एक रैंक एक पेंशन के मामले में सरकार वक्तव्य तो दे रही है लेकिन केवल रक्षा-कर्मी ही जानते हैं कि आज तक इस मामले में कोई प्रगति नहीं हुई है। आज राष्ट्र के समक्ष जो समस्याएं हैं उनका कारण सरकार की साख का खत्म होना है। इसके कारण कांग्रेसनीत् संप्रग सरकार नेतृतव बिखर गया है।

कैग को बदनाम करने के लिए हमला- एक खतरनाक उदाहरण स्थापित

कैग जैसी एक संविधानिक प्राधिकरण पर हमला करने में कांग्रेस के प्रवक्ताओं के प्रयास को प्रधानमंत्री ने जिस तरह से प्रोत्साहित किया है वह मान्य नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि कैग राजनीतिक उद्देश्य रखते हैं और इस तरह से उन्होंने संस्थाओं को बदनाम किया। लोकतंत्र में यह पूरी तरह अस्वीकार्य है और कांग्रेस को स्वयं प्रधानमंत्री द्वारा की गई इस भारी भूल पर खेद व्यक्त करना होगा।

संप्रग टूटने के कगार पर

चाहे मल्टीब्रांड रिटेल में एफडीआई का मामला हो या डीजल मूल्य में वृद्धि का मामला हो, संप्रग के गठबंधन सहयोगियों ने इस डूबते हुए जहाज को स्पष्ट रूप से छोड़ना आरम्भ कर दिया है। यद्यपि एक महत्वपूर्ण सहयोगी दल-सरकार से बाहर हो गया है तथापि अन्य ऐसा करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आज सरकार का सर्वाधिक वफादार साथी सीबीआई प्रतीत होता है। वास्तव में सीबीआई अथवा प्रवर्तन निदेशालय (ED) जैसी एजेंसियों का घोर दुरुपयोग करके सरकार सत्ता में बने रहने के लिए आंकड़ों का सहारा ले रही है, किस हद तक दुरुपयोग किया जा सकता है उसका पता इस बात से चलता है कि सीबीआई आंध्रप्रदेश में कांग्रेस मंत्रियों से संबंधित मामले में कार्रवाई नहीं कर रही। सुरेश कलमाड़ी का नाम सीबीआई की चार्जशीट में नहीं है। उन छोटी पार्टियों के बारे में कोई कार्रवाई नहीं की जाती जो लोगों से संबंधित मुद्दों के बारे में बात करती है परन्तु जब संसद में प्रस्तावों पर मतदान की बात होती है तो पीछे हट जाती है।

सत्ता में बने रहने की हताशा में और दिखाने के लिए ही वह देश में शासन करने के लिए आवश्यक नेतृत्व दे सकती है, कांग्रेस पार्टी वह सब कुछ कर रही है जिससे वंशानुगत

शासन को बढ़ावा देने के लिए अधिक जाना जाता है। कांग्रेस हाल के राज्य चुनावों के दौरान भारत के लोगों द्वारा वंशानुगत आधारित राजनीति को बार-बार नामंजूर किये जाने की बात को नहीं मानती।

आंतरिक सुरक्षा, आतंकवाद एवं अस्थिरता

जम्मू-कश्मीर में निर्वाचित सरपंचों की लगातार की जा रही हत्याओं और दी जा रही धमकियों से यह स्पष्ट है कि आतंकवाद फिर अपना सिर-उठा रहा है। पता चला है कि सीमा पार से आतंकवाद को अंजाम देने में लश्कर-ए-तोयबा का सक्रिय हाथ है। उसका जम्मू-कश्मीर की कांग्रेस-नेशनल कांफ्रेंस सरकार और कांग्रेसनीत संप्रग इस बात से इंकार करते हैं। आतंकवाद से कड़ाई से निपटना चाहिए। इस बात पर भाजपा पूर्णतया दृढ़ संकल्पित है। इस विषय पर कांग्रेस के अस्पष्ट और दिशाहीन रवैये ने देश को कहीं का नहीं रखा है आज तक पाकिस्तान ने कोई ठोस सबूत नहीं दिया है कि वह मुंबई हमले को अंजाम देने वालों पर कार्रवाई करने के प्रति गंभीर है। कश्मीर घाटी में कहीं पर कंधार मामले के मास्टर माइंड की गिरफ्तारी से धमकियों की गंभीरता का पता चलता है। बांग्लादेशियों के अवैध प्रवासन ने असम के चार लाख से अधिक लोग बेघर हो गये और वे शिविरों में रह रहे हैं। हिंसा का डर बहुत गंभीर है और राज्य और केन्द्र दोनों में कांग्रेस अवैध प्रवासन के बारे में इंकार करते हैं। आजाद मैदान में अमर-जवान-ज्योति पर किये गए शर्मनाक हमले, दो गुटों में आपसी झगड़े के बाद बरेली में निरंतर कर्फ्यू, कोसी और डासना में लगातार सांप्रदायिक तनाव और आईबी की ताजा रिपोर्ट कि उ.प्र. सहित देश के कई भागों में सांप्रदायिक स्थिति अत्यंत तनावपूर्ण है। इन सबसे पता चलता है कि सरकार नाम की कोई चीज नहीं है। बढ़ती हुई कट्टरपंथी जिहादी गतिविधियां केरल को आतंकवाद का गढ़ बना रही है। कांग्रेस पार्टी जो (IUML) के साथ गठबंधन में है, इस बात को मानने से इंकार कर रही है कि दक्षिण भारत में आतंकी गुट अपना प्रभाव बढ़ा रहे हैं, तथापि असम हिंसा के मामले को साम्प्रदायिक मामला बताया जा रहा है जबकि असली मुद्दा भारतीय बनाम विदेशी है जो अवैध रूप से देश में दाखिल होते हैं और हमारी जमीन पर बसने का प्रयास करते हैं। जम्मू एवं कश्मीर पर वार्ताकारों की रिपोर्ट, जिसमें पाक अधि त काश्मीर को पाकिस्तान शासित बताया गया है, पर सरकार की चुप्पी निन्दनीय है। शासन करने का हक खो देने से राष्ट्र का बहुत नुकसान हो रहा है

राजग सर्वोत्तम कार्य निष्पादन सरकारें प्रदान कर रहा है

यह सुस्थापित तथ्य है कि भारत में अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में जो सरकार थी वह सर्वोत्तम सरकार थी। राजग सरकार ने सर्वोत्तम बुनियादी ढांचा विकास प्रदान किया, पारदर्शी नीतियां और अन्त्योदय को शासन का प्रमुख अंग माना। लगातार तीन वर्ष तक खराब मानसून, पोखरन-II के बाद अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबन्धों, एक विनाशकारी भूकंप, कारगिल युद्ध के बावजूद किसी भी राज्य को किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं हुई यहां तक कि अनाज के वितरण की बात थी। छोटे या बड़े उद्योग फले-फूले, नौकरियां सृजित की गई और लोगों की सामान्य आर्थिक कल्याण और राष्ट्र दोनों साथ-साथ आगे बढ़े। इसी प्रकार आज राजग शासित राज्य हैं।

समय-समय पर भारत सरकार द्वारा जारी किये गये आंकड़े बताते हैं कि हर क्षेत्र में चाहे गरीबी उन्मूलन हो, अल्पसंख्यक के कल्याण की बात हो, सार्वजनिक वितरण प्रणाली या महिला और बाल कल्याण की बात हो या शिक्षा की बात हो राजग द्वारा शासित राज्य सर्वोत्तम कार्य करने वाले राज्य माने जा रहे हैं। भाजपा तेलंगाना के प्रति अपना वचन दोहराती है। केवल कांग्रेस ऐसी पार्टी है जो वर्तमान स्थिति और इस मामले में लगातार अनिश्चितता बनाए रखने के लिए उत्तरदायी है।

भाजपा राष्ट्र के हित के लिए अपने आपको पुनः समर्पित करती है।

कुरुक्षेत्र की भूमि में राष्ट्रीय परिषद की इस बैठक में भाजपा अपने आपको राष्ट्र के हित में समर्पित करती है और देश के लोगों को आश्वासन देती है कि सुशासन, समानता और शुचिता के साथ विकास और राष्ट्रवाद के अपने बेदाग रिकार्ड के आधार पर वह देश के गौरव को बहाल करेगी। केवल भाजपा ही एक असुरक्षित राष्ट्र के समक्ष पेश आ रही है समस्याओं से छुटकारा प्रदान कर सकती है।

- हम मांग करते हैं कि प्रधानमंत्री को अविलम्ब त्यागपत्र दे देना चाहिए। कोयला घोटाले में CBI निष्पक्ष जांच नहीं कर सकती क्योंकि प्रधानमंत्री के रूप में यह संस्था उनको रिपोर्ट करती है और जब उनकी खुद की भूमिका गंभीर सवालों के घेरे में है तो जब तक वे पद पर हैं सीबीआई कैसे ईमानदारी से जांच कर पायेगी।
- हम सभी 142 कोयला ब्लॉकों के आवंटन को रद्द करने की मांग करते हैं।
- हम मांग करते हैं कि एक विशेष जांच दल द्वारा आज तक के सबसे बड़े घोटाले की जांच करवाई जाये जिसके कारण निजी कंपनियों को 1.86 लाख करोड़ रुपये का भारी मुनाफा हुआ था। ■

विदेशी दबाव में यूपीए ने मल्टीब्रांड खुदरा व्यापार में एफडीआई को मंजूरी दी

सूरजकुंड (हरियाणा) में आयोजित भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय परिषद् बैठक में सर्वसम्मति से आर्थिक प्रस्ताव पारित किया गया। इस प्रस्ताव को भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री प्रकाश जावडेकर ने प्रस्तुत किया। इसमें प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह पर प्रहार करते हुए कहा गया है कि वह अर्थव्यवस्था का प्रबंधन करने और मुद्रास्फीति पर नियंत्रण रखने में नाकामयाब रहे। वहीं यूपीए सरकार द्वारा मल्टीब्रांड खुदरा व्यापार में एफडीआई की मंजूरी दिये जाने को राष्ट्र विरोधी निर्णय करार देते हुए बताया गया है कि इस फैसले से से हमारे खुदरा व्यापार पर बुरा प्रभाव पड़ेगा और न केवल फुटकर क्षेत्र बल्कि विनिर्माण क्षेत्र में भी इससे काफी पैमाने पर बेरोजगारी पैदा होगी, क्योंकि मल्टीब्रांड रिटेल चेन्स सारे विश्व में अपना कारोबार करेंगी। हम यहां आर्थिक प्रस्ताव का पूरा पाठ प्रकाशित कर रहे हैं:

मुंबई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में स्वीकृत आर्थिक प्रस्ताव में भाजपा ने जोर देकर यह कहा था कि भारतीय अर्थव्यवस्था काफी हद तक खराब हो चुकी है और वर्तमान स्थिति 1991 की स्थिति की ही तरह हो गई है और मंदी, भ्रष्टाचार और कुप्रशासन के कारण ऐसी स्थिति पैदा हुई है। गत चार महीनों के दौरान जो घटनाएं घटी हैं और जो कुछ भी पता चला है उसने भाजपा के (स्टैण्ड) दृष्टिकोण को सही ठहराया है। प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में स्वयं यह स्वीकार किया है कि आज की स्थिति 1991 की स्थिति के समान है तथापि दुर्भाग्यवश प्रधानमंत्री ने जिस बात का उल्लेख नहीं किया वह यह है कि 1991 की स्थिति से पूर्व कांग्रेस ने 9 वर्ष तक देश पर शासन किया। इसी तरह 2004 में जब अर्थव्यवस्था बहुत बेहतर स्थिति में थी, तब से कांग्रेस 8 वर्ष से अधिक की अवधि से लगातार देश में शासन कर रही है। अत: तथ्यों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि देश की अर्थव्यवस्था की इस भयानक स्थिति के लिए सामान्य रूप से कांग्रेस पार्टी और विशेष रूप से प्रधानमंत्री जवाबदेह और उत्तरदायी हैं। कांग्रेस ने सदा ही शासन किया है और जब भी वह सत्ता में रही है उसने अर्थव्यवस्था को बर्बाद किया है।

आज देश के समक्ष ये जितनी भी समस्याएं हैं उनका मूल कारण भ्रष्टाचार है। कोयला ब्लॉकों के आवंटन में जितने बड़े भ्रष्टाचार कांड का पता चला है उससे कैग के बहुत ही अनुदारवादी अनुमान के अनुसार 1.86 लाख करोड़ का नुकसान हुआ है। 50 लाख करोड़ से अधिक मूल्य के 17 बिलियन टन कोयला भंडार बड़े ही मनमाने ढंग से 140 निजी कंपनियों को सौंप दिए गए। यह आवंटन बिना किसी तुलनात्मक मूल्यांकन के और चयन के किसी वैध कारण के बिना आवंटित कर दिए गए। यह एक और अंतरंग पूंजीवाद और शक्ति के घोर दुरुपयोग का उदाहरण है।

घोटालों में जो 11 नाम सर्वप्रथम उजागर हुए वे कांग्रेस और उनके सहयोगियों के हैं। यह भारत में आज तक हुए घोटालों में सबसे बड़ा घोटाला साबित होगा। कांग्रेस ने यह कहकर अपनी धृष्टता दिखाई है कि लोग कोयला घोटाले को भी उसी तरह भूल जायेंगे जिस तरह वह बोफोर्स घोटाले को भूल गए हैं। वास्तव में लोग कभी भी बोफोर्स घोटाले को नहीं भूले हैं और उन्होंने बाद के चुनावों में कांग्रेस को सबक

सिखाया। कोयला घोटाला बोफोर्स घोटाले से अधिक गंभीर है और भारत के लोग अवश्य ही इस प्रकार के भ्रष्टाचार को हमेशा याद रखेंगे, जिसके कारण लोकतंत्र की नींव हिल गई और देश का आर्थिक विकास बाधित हुआ है।

राजकोषीय प्रबंधन एवं मंद विकास

वित्तीय वर्ष – 2013 में राजकोषीय घाटा 5.1 प्रतिशत बजटीय घाटे की तुलना में 6 प्रतिशत के लगभग रहेगा। वास्तव में यह जुलाई 2012 को समाप्त होने वाले चार महीनों के अंदर ही वित्तीय वर्ष-2013 के लिए बजट अनुमानों के 51.5 प्रतिशत तक पहुच गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि यूपीए सरकार FRBM काल का अनुसरण करने में असफल रही है।

वित्तीय वर्ष-2012 के लिए वर्तमान लेखा घाटा 3.5 प्रतिशत के योजनागत घाटे की तुलना में 4.1 प्रतिशत था। इन दोनों घाटों से देश में विद्यमान भयानक स्थिति का पता चलता है। निर्यात में 25 बिलियन डॉलर की कमी हुई है; IIP कम होकर -1.2 प्रतिशत रह गई है। पूंजीगत माल के निर्यात में भी कमी हुई है जोकि काफी लम्बे समय तक विनिर्माण क्षेत्र के लिए खतरे की बात है। बिजली की कमी और ऊंची ब्याज दरों के कारण औद्योगिक विकास पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

मल्टीब्रांड रिटेल में एफडीआई की अनुमति देने संबंधी निर्णय को तुरंत वापस लिया जाए।

गत छह महीनों में देश की विकास दर कम होकर औसतन 5.4 प्रतिशत हो गई है और इस वर्ष में विकास की अनुमानित दर लगभग 5 प्रतिशत रहने की संभावना है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर से बहुत ही कम है जिसे आसानी से 10 प्रतिशत से अधिक किया जा सकता है। चिंता की बात यह है कि न केवल अर्थव्यवस्था में मंदी आ रही है बल्कि इससे मुद्रा-स्फीति भी लगातार बढ़ रही है जो उपभोक्ता के लिए 10 प्रतिशत से अधिक है। 5 प्रतिशत से कम की मुद्रास्फीति के साथ 10 प्रतिशत की विकास दर लाने के बजाए हम 10 प्रतिशत से अधिक की मुद्रास्फीति से 5 प्रतिशत की विकास दर ला रहे हैं।

रुपये का 20 प्रतिशत से अधिक का अवमूल्यन हुआ है और सरकार का विदेशी मुद्रा भंडार बहुत कम हो गया है। गत चार वर्षों से सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 6 प्रतिशत के लगातार राजकोषीय घाटे का अर्थ यह है कि सरकार बाजार से बहुत अधिक उधार ले रही है और निजी निवेश भारी मात्रा में बढ़ाती जा रही है।

इससे ऐसी स्थिति पैदा हो गई जिसमें अंतर्राष्ट्रीय रेटिंग एजेंसी भारत को नीचा दिखाने की धमकी दे रही है जिसका अर्थ होगा- हमारे निवेश ग्रेड की स्थिति में कमी होना और देश के लिए ऋण संबंधी लागत में वृद्धि होना। इस भयावह स्थिति के लिए आज की संप्रग सरकार पूर्णत: उत्तरदायी है।

उस समय की अर्थव्यवस्था याद रखना बेहतर होगा जब भाजपानीत् राजग सरकार ने 2004 में शासन छोड़ा था और जो आने वाली कांग्रेसनीत संप्रग सरकार को विरासत में मिली थी। वर्ष 2004-05 के आर्थिक सर्वेक्षण में स्पष्ट रूप से यह बताया गया था कि ''....देश में तीव्र विकास और मुद्रास्फीति नियंत्रण के हिसाब से लचीली अर्थव्यवस्था है।''

अर्थव्यवस्था में राजग का योगदान

राष्ट्र प्रधानमंत्री वाजपेयी के शायनकाल के दौरान विद्यमान आर्थिक स्थिति को स्पष्ट रूप से आज भी याद करता है। सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि मुद्रास्फीति पर नियंत्रण रखते हुए देश को तीव्र विकास के पथ पर लाना। रुपया बहुत मजबूत था, विदेशी मुद्रा भंडार बहुत तेजी से बढ़ रहे थे।

राजग सरकार ने कम ब्याज दरें सुनिश्चित की जिनसे षि क्षेत्र, आवास, उद्योग और उपभोक्ताओं को प्रत्यक्ष रूप से लाभ मिला। षि, आवास, ऑटोमोबाइल, शिक्षा ऋणों पर ब्याज दरें स्वीकार्य स्तरों पर थीं जबकि भारतीय उद्योग और विनिर्माण क्षेत्र को कम वित्त पोषण लागत के कारण प्रतिस्पर्धी बनाया गया। अभाव, कतारें और काला बाजारी खत्म हो गई थी क्योंकि भारत में बहुतायात का युग आ गया था। संपर्क (Connectivity) चर्चा की आम बात हो गई थी। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार द्वारा प्रगतिशील नीतियां बनाये जाने के परिणाम स्वरूप बुनियादी ढांचे का बड़ी तेजी से विकास हआ था। सड़क संपर्क, रेल संपर्क, हवाई संपर्क, समुद्री संपर्क, डिजिटल संपर्क, दूरसंचार संपर्क भारत की बढ़ती हुई अपेक्षाओं के अनुसार हुआ।

कृषि मोर्चे पर एक ठोस नीति के कारण कोल्ड स्टोरेज और गोदामों की क्षमता बढ़ गई। 1998 के आणविक परीक्षणों से भी देश के नागरिकों की राष्ट्रप्रेम भावनाएं बढ़ीं।

जिस समय भाजपानीत राजग सरकार ने शासन छोड़ा था उस समय भारत विश्व में एक शीर्ष स्थान पर था, और एक भावी आर्थिक सुपर पावर के रूप में उभर रहा था।

प्रधानमंत्री का निष्प्रभावी भाषण

इस संबंध में तीस महीनों के बाद राष्ट्र के नाम प्रधानमंत्री का संबोधन प्रभावहीन और गैर प्रेरणादायक था।

प्रधानमंत्री की निराशा उस समय स्पष्ट देखने को मिली जब उन्होंने दर्शकों को बताया कि ''पैसा पेड़ पर नहीं

उगता।'' लोग यह बात भलीभांति जानते हैं कि पैसा पेड़ पर नहीं उगता तथापि कांग्रेस के लिए पैसा राष्ट्रमंडल खेल, 2-जी, कोयला घोटाला और अन्य घोटालों के पेड़ों पर उगता है। अपने 12 मिनट के भाषण में प्रधानमंत्री ने महंगाई से त्रस्त लोगों की कठिनाईयों के बारे में एक वाक्य भी नहीं बोला और उनके लिए कोई समाधान या हमदर्दी की कोई पेशकश नहीं की।

महंगाई मोर्चे पर विफलता

अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री की सबसे बड़ी असफलता यह रही है कि वह अर्थव्यवस्था का प्रबंधन करने और मुद्रास्फीति पर नियंत्रण रखने में नाकामयाब रहे। लोग लगातार बढ़ते मूल्यों से दु:खी हैं और निरंतर बढ़ रही मुद्रास्फीति से परेशान हैं। गत 15 दिनों में, चीनी, खाद्य तेल, दालों, सब्जियों, दूध और कई अन्य खाद्य और अखाद्य वस्तुओं के मूल्यों में भारी वृद्धि हुई। इस समय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक दोहरे अंक को पार कर चुका है। डीजल के मूल्य में वृद्धि से उपभोक्ता मूल्य सूचकांक अगले दो महीनों में 12 प्रतिशत से अधिक हो जायेगा।

लोग परेशान हैं, दु:खी हैं और सरकार वास्तविक कम खर्चीले उपाय उठाने और बढ़ते हुए राजस्व व्यय को रोकने जैसे कोई भी कारगर प्रयास नहीं कर रही है।

मुद्रास्फीति प्रबंधन के लिए मांग और आपूर्ति दोनों प्रकार के मुद्दों की ओर ध्यान देना आवश्यक है। वर्तमान सरकार ने लिक्विडिटी को और कम करके और ब्याज दरों को 13 बार बढ़ाकर के मांग संबंधी मुद्दे को ही तरजीह दी है। बढ़ती हुई ब्याज दरें अनुत्पादक हैं और इनसे मूल्य और भी बढ़ते हैं और भारतीय निर्यात को यह दरें गैर प्रतिस्पर्धात्मक भी बनाती है।

डीजल के मूल्यों में नाजायज वृद्धि और रसोई गैस सिलिंडरों की सीमा निर्धारण

डीजल के मूल्यों में भारी वृद्धि, जिससे 40,000 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष का अवहनीय बोझ पड़ा है, से लगभग हर एक वस्तु के मूल्यों में वृद्धि हो जायेगी। परिवहन के प्रत्येक साधन की लागत बढ़ जायेगी और किसानों को नुकसान होगा क्योंकि खेती के उपकरणों और भूमि से पानी निकालने की लागत बढ़ जायेगी। उद्योग और मछुआरों पर भी इनपुट की ऊंची लागत का बुरा प्रभाव अवश्य पड़ेगा। डीजल मूल्य में वृद्धि गत एक वर्ष में पेट्रोल की कीमत में प्रति लीटर 12 रुपये की वृद्धि करने के तुरंत बाद की गई। भारत में पेट्रोलियम उत्पादों पर सबसे अधिक कर वसूले जाते हैं। रियायती दरों पर रसोई गैस के सिलिंडरों की संख्या 6 निर्धारण करना जनविरोधी निर्णय है और यह एक प्रकार का छद्म रूप से मूल्य वृद्धि करना ही है। एक औसत परिवार को 12 से 20 सिलिंडरों की आवश्यकता होती है। नई व्यवस्था में उन्हें प्रति गैर रियायती रसोई गैस सिलिंडर पर 400 रुपये अधिक देने पड़ेंगे। इस प्रकार यह इस्तेमाल किये गये रसोई गैस सिलिंडरों पर प्रतिवर्ष 3000-4000 रुपये का खर्च बढ़ जायेगा।

यह कांग्रेसनीत संप्रग सरकार द्वारा खाद्य ईधन और उर्वरकों के मूल्यों को नियंत्रण करने के संबंध में दिखाई गई निष्क्रियता का बहुत बड़ा उदाहरण है।

कृषि संबंधी समस्याएं

देश की कृषि अर्थव्यवस्था पर कृषि क्षेत्र की अनदेखी के कारण बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। यह लोगों को रोजगार देने का सबसे बड़ा जरिया है। कृषि क्षेत्र सभी इनपुट की बढ़ती हुई कीमतों से बुरी तरह से प्रभावित हैं चाहे वह उर्वरक हो, बीज हो या कीटनाशक दवाईयां हों। इसके अलावा, इस वर्ष अनिश्चित मानसून के कारण कृषि पहले से ही कुप्रभावित है और किसानों को एक कठिन स्थिति से गुजरना पड़ रहा है। ये लोग देश के विभिन्न भागों में सूखे और बाढ़ की स्थिति का भी सामना कर रहे हैं।

उर्वरकों के मूल्यों को नियंत्रित करने से संप्रग सरकार की भारी निष्क्रियता से किसानों की समस्याएं और भी बढ़ गई हैं। कुछ मामलों में उर्वरकों के मूल्यों में गत तीन वर्षों के दौरान कई गुणा वृद्धि हुई है। सरकार की न्यूट्रियंट बेस्ड सब्सिडी (NBF) नीति पूरी तरह से असफल रही है। संप्रग सरकार ने किसानों को एक न्यूनतम आम गारंटी सुनिश्चित करने के लिए राजग द्वारा चालू किए गए महत्वाकांक्षी कार्यक्रम को छोड़ दिया गया है और इसने उत्पादन लागत से 50 प्रतिशत अधिक देने संबंधी स्वामीनाथन आयोग के लाभप्रद मूल्य देने के फार्मूले को मानने से इंकार कर दिया है। किसानों को उचित न्याय न मिलने के कारण उनके द्वारा आत्महत्या की घटनाएं बढ़ रही हैं। एक उचित उर्वरक नीति बनाए जाने की तुरंत आवश्यकता है।

विदेशी दबाव के कारण खुदरा में एफडीआई

सरकार का एक और जनविरोधी निर्णय है- विदेशी दबाव में आकर मल्टीब्रांड खुदरा व्यापार में अनुमति देना। सरकार ने संसद के दोनों सदनों में एक पक्का वादा किया था कि वह इस संबंध में आम सहमति पर पहुंचने के लिए सभी राजनीतिक पार्टियों और राज्य सरकारों से बात करेगी। यह वादा तोड़ दिया गया है। मल्टीब्रांड खुदरा में एफडीआई की अनुमति देने से हमारे खुदरा व्यापार पर बुरा प्रभाव पड़ेगा

और न केवल फुटकर क्षेत्र बल्कि विनिर्माण क्षेत्र में भी इससे काफी पैमाने पर बेरोजगारी पैदा होगी, क्योंकि मल्टीब्रांड रिटेल चेन्स सारे विश्व में अपना कारोबार करेंगी। भारत में फुटकर व्यापार क्षेत्र तीसरा सबसे बड़ा रोजगार देने वाला क्षेत्र है और दस मिलियन से अधिक व्यापारिक प्रतिष्ठान प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 40 मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान करता है। जब हम विश्व में मल्टीब्रांड रिटेल की ओर देखते हैं तो पता चलता है कि इससे रोजगार के अवसर खतरे में पड़ जायेंगे। इस तथ्य को सभी जानते हैं कि मल्टीब्रांड रिटेल चेन द्वारा सृजित की गई प्रत्येक एक लाख नौकरियों के पीछे 5 लाख नौकरियां समाप्त हो जाती हैं।

किसानों को भी कोई लाभ नहीं होगा। खाद्य प्रसंस्करण में स्वत: 100 प्रतिशत के एकडीआई का अनुभव कोई उत्साहजनक नहीं है। 25 बिलियन अमरीकी डालर अधिक की एफडीआई के माध्यम से निवेश होने की आवश्यकता है परंतु इस निर्णय के 10 वर्ष के बाद जमीनी सच्चाई यह है कि इन आंकड़ों का 5 प्रतिशत भी निवेश नहीं किया गया है। अत: बैक (back) एण्ड बुनियादी ढांचे का सृजन एक काल्पनिक सत्य है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ये मल्टीब्रांड रिटेल चेन भारत में मुनाफा कमाने आ रही है न कि दान देने के लिए। ग्रामीण कारीगरों पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

सरकार द्वारा एक बहुत बड़ा झूठ और जो अफवाह फैलाई जा रही है जो राज्य सरकारों द्वारा यह निर्णय लिए जाने के अधिकार से संबंधित है कि वे अपने-अपने राज्य में विदेशी मल्टीब्रांड रिटेल चेन्स की अनुमति दें या न दें। एक बार केन्द्र द्वारा अनुमति दिये जाने पर मल्टीब्रांड रिटेल में एफडीआई की अनुमति देने या न देने की सरकारों की क्षमता हमारी कुछ द्विपक्षीय निवेश संबंधी संधियों के अधीन संभव न हो पाये। दूसरे यदि प्रत्येक राज्य को स्वतंत्रता दे दी जाती है तो उस समय क्या होगा यदि राज्य सरकारें बदल जाती हैं। अत: भाजपा यह मांग करती है कि मल्टीब्रांड रिटेल में एफडीआई लागू करने के निर्णय को वापस लिया जाये।

वास्तविक सुधारों की आवश्यकता

सरकार से काले धन को वापस लाने और भ्रष्टाचार के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने जैसे जनता के हित वाले सुधार करने की अपेक्षा थी, परंतु ऐसा करने के बजाए वह अपने जनविरोधी प्रशासनिक निर्णयों को बड़े-बड़े सुधार कहकर प्रचार कर रही है। यदि सरकार मनमाने ढंग से आवंटित किये सभी कोयला ब्लॉकों को रद्द करती है, तो इससे सरकारी खजाने को नीलामी के माध्यम से 2 लाख करोड़ रुपये का फायदा होगा और यदि नीलामी की शर्तों को सही तरीके से निर्धारित किया जाता है तो उपभोक्ताओं को सस्ती बिजली का लाभ मिल सकेगा। 2जी नीलामी से पहले ही यह सिद्ध हो चुका है। 2जी नीलामी से धोखेधड़ी से आवंटन के माध्यम से वसूल किए गए 15000 करोड़ रुपये की तुलना में 1,50,000 करोड़ की वसूली होगी। प्रधानमंत्री विदेशी आलोचना और नकारात्मक मीडिया कवरेज के शिकार हो गए हैं।

प्रशासन में वास्तविक सुधारों की आवश्यकता है जिसमें कुशलता और पारदर्शिता लायी जा सकेगी। हमें सामरिक क्षेत्रों में और उच्च प्रौद्योगिक क्षेत्र में एफडीआई की जरूरत है। हमें बुनियादी ढांचा क्षेत्र में भी एफडीआई को प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि वह धन की कमी का सामना कर रहा है। वर्तमान सरकार इन क्षेत्रों में भारी पैमाने पर पब्लिक निवेश जुटाने में असफल रही है। बुनियादी ढांचे के विकास से भारी पैमाने पर रोजगार के अवसर सृजित होंगे और इसके गरीब लोग सशक्त होंगे।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि इन तथाकथित सुधारों का उद्देश्य सरकार के भारी घोटालों से लोगों का ध्यान बंटाना मात्र ही है। उनका एकमात्र उद्देश्य लोगों को और आर्थिक दु:ख देना है जो पहले से अनियंत्रित महंगाई, उच्च ईएमआई और मौलिक सुविधाओं की कमी से परेशान हैं। सरकार सभी मोर्चों पर असफल रही है और उसे हमेशा के लिए गद्दी छोड़कर चले जाना चाहिए। भाजपा ने संप्रग सरकार के खिलाफ बहुत बड़े पैमाने पर लोकतांत्रिक विरोध शुरु करने का निर्णय लिया है। भाजपा देश के लोगों से इस विरोध में एकजुट होने की अपील करती है।

भाजपा मांग करती है :

1. डीजल के मूल्य में वृद्धि और प्रतिवर्ष रसोई गैस सिलिंडरों की सीमा निर्धारित करने के निर्णय को तुरंत वापस लिया जाए।
2. मल्टीब्रांड रिटेल में एफडीआई की अनुमति देने संबंधी निर्णय को तुरंत वापस लिया जाए।
3. सरकार को उर्वरकों के मूल्यों को जल्दी कम करने के लिए तुरंत और कारगर कदम उठाने चाहिए।
4. कोयला घोटालों में 2004 से आवंटित किए गए कोयला ब्लॉकों को रद्द किया जाए और एक पारदर्शी नीलामी प्रक्रिया शुरु की जाए।
5. कोयला घोटाले की निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच करायी जाए।

■

यूपीए–2 ने वैधता खो दी है : लालकृष्ण आडवाणी

सूरजकुण्ड (हरियाणा) में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं परिषद बैठक में मार्गदर्शन भाषण देते हुए भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने स्पष्ट तौर पर कहा कि जहां यूपीए-1 ने 'नोट के बदले वोट' घोटाले के कारण अपनी वैधता खो दी थी, वहीं यूपीए-2 ने भ्रष्टाचार संबंधी अनेक घोटालों के कारण अपनी वैधता खो दी है। श्री आडवाणी ने प्रतिनिधियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि वर्तमान समय में देश में अराजकता व्याप्त है। हमें इस अवसर पर तैयार हो जाना चाहिए ताकि हम भारत को कांग्रेस पार्टी के भ्रष्ट तथा जनविरोधी कुशासन से आजाद करा सकें और अपनी मातृभूमि के चहुंमुखी तथा तेजी से विकास के मार्ग को प्रशस्त कर सकें। हम श्री आडवाणी के भाषण का पूरा पाठ यहां प्रकाशित कर रहे हैं:

आदरणीय अध्यक्षजी, श्री अरुण जेटलीजी और मेरे सभी सम्मानित साथियों,

राष्ट्रीय कार्यकारिणी और राष्ट्रीय परिषद की प्रत्येक बैठक महत्वपूर्ण होती है। परंतु यह बैठक विशेष रूप से हमारी पार्टी, वास्तव में, हमारे देश के लिए भी महत्वपूर्ण है।

कल राष्ट्रीय परिषद सत्र के प्रारंभ होने पर हमारे पार्टी के अध्यक्ष की शुरुआती टिप्पणियां पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं को आगामी निर्णायक लड़ाई के लिए तैयार रहने हेतु उनकी जोश भरी अपील के लिए महत्वपूर्ण थीं।

वास्तव में, आगे एक निर्णायक चुनावी लड़ाई सामने है जिसके कारण हमारी कार्यकारिणी और परिषद की यह बैठक असाधारण रूप से महत्वपूर्ण हो गई है।

यूपीए-1 की तरह ही यूपीए-2 ने वैधता खो दी है, 2013 में चुनाव लगभग तय

आमतौर पर लोकसभा के लिए चुनाव मई 2014 के आसपास होने हैं तथापि निश्चित तौर पर यह लग रहा है कि वे काफी पहले- यहां तक कि पूरा एक वर्ष पहले होने की संभावना है। पिछले दो वर्ष से अधिक से यह सरकार वास्तव में अजीब सी हो गई है।

यूपीए-2 सरकार, जो लोकसभा में बहुमत खो चुकी है, इस समय ऑक्सीजन पर टिकी हुई है। यदि हम उस विशिष्ट मुद्दे पर विचार करते हैं जिसके कारण सरकार ने बहुमत खो दिया है वह है- डीजल मूल्य में वृद्धि और खुदरा में एफडीआई संबंधी हाल के निर्णय- यह स्पष्ट है कि यूपीए-2 उस कमजोर ऑक्सीजन पर भी भरोसा नहीं कर सकती। जो पार्टियां ऑक्सीजन दे रही हैं वह स्वयं इन निर्णयों के खिलाफ हैं। उनमें से दो- समाजवादी पार्टी और डीएमके- ने तो 20 सितम्बर के भारत बंद में भी भाग लिया था।

अत: यूपीए को सत्ता में बने रहने का न तो राजनीतिक तौर पर अधिकार है और न ही नैतिक औचित्य भी।

यूपीए-1 ने 'नोट के बदले वोट' घोटाले के कारण अपनी वैधता खो दी थी।

यूपीए-2 ने भ्रष्टाचार संबंधी अनेक घोटालों के कारण अपनी वैधता खो दी है। ये घोटाले चौंका देने वाले हैं। यह कोई आम भ्रष्टाचार नहीं है यह राष्ट्र के संसाधनों की लूट है। कैग की अनेक रिपोर्टों ने इसे पूरी तरह से सिद्ध कर दिया है। यह किस प्रकार हुआ? यह जानना भारत के लोगों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

प्रधानमंत्री और कांग्रेस अध्यक्ष उन घोटालों के लिए समान रूप से भागीदार जिनके कारण यूपीए-1 और यूपीए-2 बदनाम हुए हैं

मैं यूपीए-1 और यूपीए-2 दोनों द्वारा वैधता खोने के तीन कारण मानता हूं:-

पहला, प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह इस देश में आज तक के हुए प्रधानमंत्रियों में से सबसे कमजोर प्रधानमंत्री सिद्ध हुए हैं। इस बात का मुझे खेद है कि उन्होंने मुझे सही सिद्ध

किया है।

दूसरा, प्रधानमंत्री की कमजोरी का प्रमुख कारण यह है कि उन्होंने 10 जनपथ के लिए अपनी वास्तविक सत्ता छोड़ दी। इस प्रकार सत्ता के दो केन्द्र होना शासन की संसदीय प्रणाली के मूल सिद्धांत के विरुद्ध हैं जिसमें संविधान के अनुसार प्रधानमंत्री सरकार का राजनीतिक और कार्यकारी प्रमुख होता है।

तीसरा, सत्ता का वास्तविक केन्द्र- श्रीमती सोनिया गांधी- उन राजनीतिक वित्तीय भ्रष्टाचार के घोटालों के लिए दोषी होने से बच नहीं सकतीं जिसके कारण यूपीए-1 और यूपीए-2 अवैध बन गये हैं। श्रीमती गांधी ने डॉ. मनमोहन सिंह के दब्बूपन का कांग्रेस और यूपीए के मंत्रियों के भ्रष्ट त्यों को छिपाने के लिए अपने लाभ के लिए इस्तेमाल किया, इसके लिए उनकी पूरी स्वीकृति थी।

इस बात में बिल्कुल कोई संदेह नहीं है कि यूपीए आने वाले महीनों में बिखरती जायेगी। हम सब के लिए यह आवश्यक है कि हम इस मौके का लाभ उठाने और राष्ट्र और लोगों के प्रति अपना कर्तव्य निभाने के लिए तैयार रहें। हम ऐसा तभी कर सकते हैं कि जब हम यह महसूस करें कि वर्तमान स्थिति का देश के लिए क्या अर्थ हो सकता है। इसके पहले कभी भी लोगों का 'मूड' निश्चित रूप में परिवर्तन के हक में नहीं था। अब यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम परिवर्तन के इस 'मूड' को भाजपा और उसके सहयोगी दलों के समर्थन के 'मूड' में बदलें।

भाजपा को एक विश्वसनीय विकल्प के रूप में उभरना होगा

लोगों का मोहभंग अब आक्रोश में बदल रहा है। राजनीति में निर्णायक मोड़ हमेशा तब आता है जब लोग आक्रोश में होते हैं, और जब लोग आक्रोश में होते हैं तो वे किसी विश्वसनीय विकल्प को जोरदार जनादेश देते हैं।

अत: भाजपा एक विश्वसनीय विकल्प के रूप में उभरकर अनेक विश्लेषकों को गलत साबित सिद्ध कर सकती है। हमारे पास 1998 और 1999 को दोहराने का अवसर है- वास्तव में हमारे पास इससे भी बेहतर करने का अवसर मौजूद है। एक विश्वसनीय विकल्प बनने के लए भाजपा को किस-किस बात की आवश्यकता है? आज मैं स्पष्ट तौर पर यह कहना चाहूंगा।

(क) भाजपा के शीर्ष नेतृत्व और सभी स्तरों के नेतृत्व को एक आवाज में बोलना चाहिए। हमें अनेक आवाजों में बोलने की प्रवृत्ति को बहुत ही कड़ाई से समाप्त करना चाहिए।

(ख) आज लोगों में जो आक्रोश है वह यूपीए के भ्रष्टाचार संबंधी घोटालों के कारण है। महंगाई उस आक्रोश को और हवा दे रही है। भाजपा राजनीति और प्रशासन में शुचिता के लिए वचनबद्ध पार्टी के रूप में जानी जाती है। यह भाजपा का 'यूएसपी' (Unique Selling Proposition) है। हमारे नेताओं, मंत्रियों, निर्वाचित प्रतिनिधियों, कार्यकर्ताओं को ऐसा आचरण करना चाहिए कि जब कभी भी लोग भाजपा के बारे में सोचें तो उन्हें भाजपा के इस 'यूएसपी' की याद आये।

(ग) हमें लोगों को विश्वासपूर्वक यह बताना चाहिए कि जिस प्रकार के परिवर्तन की वे आशा कर रहे हैं वह मात्र सरकार को बदलने का नहीं होना चाहिए बल्कि एक ऐसी सरकार होनी चाहिए जो भारत को भ्रष्टाचार-मुक्त बनाने के लिए वचनबद्ध हो। हमें उन्हें यह विश्वास दिलाना चाहिए कि केवल भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार ही इस लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकती है।

लोगों की किसी पार्टी के बारे में सोच प्राय: वास्तविकता के मुकाबले धारणाओं पर अधिक महत्वपूर्ण होती है। मुझे इस बात में किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है कि भाजपा का स्वच्छ राजनीति और सुराज के प्रति वचनबद्धता के मामले में बहुत बेहतर रिकार्ड है।

हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि लोगों को हमारी पार्टी से काफी ऊंची अपेक्षाएं हैं। अत: हमारे अपने कार्यकर्ताओं में भ्रष्टाचार का जरा भी संकेत मिलता है तो हमें उस समय और अधिक कठोर और दृढ़-निश्चयी होना चाहिए जैसाकि हम अपने विरोधियों की इसके लिए आलोचना करते हैं। इस प्रकार से हम लोगों के बीच अपनी साख बना सकते हैं। पारदर्शी प्रशासन के मानदंड के बारे में हमारी राज्य सरकारों ने पहले ही अन्य सरकारों की तुलना में अलग से मानदंड निर्धारित किए हैं। उदाहरण के तौर पर, अन्य सरकारों में आम स्थानांतरण और नियुक्तियों का मामला भारी पैमाने पर भ्रष्टाचार का स्रोत बन गया है।

संक्षेप में, भाजपा के लिए अब समय आ गया है कि वह लोगों की इस अवधारणा को बदलने में पहल करें कि ''सभी राजनीतिक पार्टियां कमोवेश भ्रष्ट हैं।''

परिस्थितियों की मांग एक व्यापक कांग्रेस विरोधी मंच : मजबूत भाजपा + विशाल एनडीए + एनडीए प्लस

देश में राजनीतिक स्थिति का सही मूल्यांकन यह है कि कांग्रेस पूर्णतया अलग-थलग पड़ रही है। कांग्रेस विरोधी आधार तेजी से बढ़ रहा है। हमारे समक्ष यह सुनिश्चित करने

की चुनौती विद्यमान है कि एनडीए मंच का समान रूप से विस्तार हो। अत: आगामी चुनावों में भाजपा के तीन कार्य इस प्रकार हैं:-

1. भाजपा को हमारे सभी वर्तमान और पूर्व के गढ़ों में (राज्य और व्यक्तिगत निर्वाचन क्षेत्र दोनों) मजबूत बनाना, हमें 1998/1999 की अपनी संख्या को पार करने का अपना लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए।
2. वर्तमान एनडीए गठबंधन को व्यापक और मजबूत बनाना।
3. एनडीए को एनडीए प्लस में बदलना।

उपर्युक्त वर्णित तीसरे कार्य में हमें अपने बड़े सहयोगी दलों को पुन: आश्वासन देना होगा कि उन्हें भाजपा के साथ सहयोग करने के बारे में किसी प्रकार की कोई आशंका नहीं होनी चाहिए। इसके लिए धर्मनिरपेक्षता के प्रति हमारी वचनबद्धता को पुन: इस ढंग से प्रस्तुत किये जाने की आवश्यकता है जिससे उनकी आशंकाएं निर्मूल हो सकें।

हमें अल्पसंख्यक समुदाय के अपने बंधुओं को दृढ़ता से यह आश्वासन पुन: देना चाहिए कि हमारे मन में विभिन्नता वाले हमारे समाज के अलग-अलग वर्गों के साथ किसी प्रकार का भेदभाव या अन्याय की कोई भावना नहीं है।

मैं यहां पर एक महत्वपूर्ण मुद्दे का उल्लेख करना चाहूंगा जो भारत में और अन्य जगहों पर मुस्लिमों को परेशान कर रहा है। श्री नितिनजी ने कल अपने लिखित भाषण में इसका उल्लेख किया था।

इस्लाम पर विवादास्पद फिल्म, जो पैगम्बर मोहम्मद के प्रति भारी अपमानजनक है, इन्टरनेट पर दिखाई जा रही है। मैं इसकी पुरजोर निन्दा करता हूं। यह पैगम्बरों और सन्तों, जो किसी भी धर्म के लिए पूजनीय हैं, को बदनाम करने के लिए हमारे नैतिक सिद्धान्तों के विरुद्ध है।

तीसरी बात जिसका मैंने वर्णन किया है वास्तव में एक अत्यन्त आकर्षक कॉमन मिनिमम एजेण्डा को दर्शाती है। अत: मैं श्री गडकरीजी को सुझाव देना चाहूंगा कि हमें इस न्यूनतम साझा कार्यक्रम को बनाने हेतु तैयारी करनी चाहिए। इसे हम सुशासन के लिए समान राष्ट्रीय प्रतिबद्धता कह सकते हैं जोकि आने वाले एनडीए की नब्ज होगी-

समान राष्ट्रीय प्रतिबद्धता के कुछ तत्व निम्न हैं:-

- सहकारी संघवाद।
- राज्यों को अधिक शक्तियां।
- राष्ट्रीय एकता के वृहद दायरे में क्षेत्रीय अस्मिताओं का अधिकाधिक सम्मान।
- किसानों, भूमिहीन मजदूरों, असंगठित क्षेत्र के कामगारों, अनुसूचित जाति, जनजातियों अन्य पिछड़ा वर्गों और अल्पसंख्यकों तथा अन्य वर्गों के गरीबों के सम्बन्ध में नवोन्मुखी नीतिगत पहलों से आर्थिक सुधारों को एक गरीबोन्मुखी फोकस।
- सुशासन सुधार।
- सामाजिक सद्भाव के साथ सामाजिक न्याय।
- साम्प्रदायिक शांति बनाए रखने के लिए पूर्णतया और प्रामाणिक आश्वस्ति, साम्प्रदायिक सद्भाव को प्रोत्साहन और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना।
- आतंकवाद के मुद्दे पर 'जीरो टालरेन्स'।
- सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ आस्था रखते हुए परिस्थितियांनुसार रणनीति में लचीलापन रखना होगा, जैसाकि पं. दीनदयाल उपाध्यायजी अपनाते थे और जिसे श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 1998 में एनडीए के गठन तथा नेतृत्व करके सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया।

सामूहिक 'इच्छाशक्ति' सभी बदलावों का मार्ग प्रशस्त करेगी

प्रिय बन्धुओं,

पार्टी के साथ अपने लम्बे सम्बन्धों- पहले जनसंघ फिर जनता पार्टी तथा बाद में भाजपा में मैंने देखा कि एक सत्य बार-बार प्रमाणित हुआ है।

जब भी पार्टी ने कुछ भी करने की मजबूती से ठानी, मिलकर काम किया, निजी आंकांक्षाओं को त्यागा और महान आदर्शों से संचालित हुए तो हमारे प्रयासों को निश्चित रूप से सफलता मिली है।

- इसी से हम 1977 में कांग्रेस को परास्त कर सके।
- इसे से हम 1980 में विपरीत परिस्थितियों पर विजय पा सके।
- इसी से 1984 के 'शोक सभा' के चुनावों में हाशिए पर चले जाने को भी निष्प्रभावी कर सके।
- इसी से 1996 में हम विरोधियों द्वारा रचे गए चक्रव्यूह से बाहर आ सके।
- इसी से 1999 में हम हमारी सरकार को अस्थिर करने वालों को करारा जवाब दे सके।
- इसे फिर से दोहराने का समय आ गया है।

आइए, इस अवसर पर हम तैयार हों। नियति हमें सफलता की ओर ले जाना चाहती है, ताकि हम भारत को कांग्रेस पार्टी के भ्रष्ट तथा जनविरोधी कुशासन से आजाद करा सकें और अपनी मातृभूमि के चहुंमुखी तथा तेजी से विकास के मार्ग को प्रशस्त कर सकें।

धन्यवाद,

वंदेमातरम्! ■

केदारनाथ जी : आदर्श कार्यकर्ता

– प्रभात झा

जनसंघ के नींव के पत्थरों में से एक प्रमुख व्यक्तित्व रहे श्री केदारनाथ साहनी का निधन हो गया। ''आदर्श कार्यकर्ता कैसा हो, केदारनाथ जी जैसा हो।'' यह कहना अतिश्योक्ति नहीं बल्कि सहज है। वे समय के पाबंद थे। अपने दायित्व एवं कार्य के प्रति स्पष्ट थे। दिल्ली जनसंघ की राजनैतिक यात्रा के वे अनथक यात्री रहे। श्री विजय कुमार मल्होत्रा सहित श्री लालकृष्ण आडवाणी एवं भाई महावीर सहित कुछ ऐसे लोग जो 75 से 80 वर्ष की उम्र के होंगे वे निश्चित ही एक स्वर से कहेंगे कि भारतीय जनसंघ को गढ़ने में श्री केदारनाथ साहनी की भूमिका उल्लेखनीय रही।

वे शांत चित्त और सदैव अध्ययनशील थे। हमने जब भी उन्हें देखा तो वे पढ़ते ही दिखे। उनके हाथों में सदैव किताबें देखी जा सकती थीं। खासकर उनका कार्यक्षेत्र दिल्ली रहा। वे प्रारम्भ से ही अध्ययनशील रहे। पढ़ाई करने के बाद

वे प्रतिस्पर्धा में उतीर्ण हुए और भारतीय वायुसेना में अधिकारी पद के लिए चयनित हुए। पर 'वे' उस कार्य में न जाते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक कर्मठ स्वयंसेवक रहे। साहनी जी का संपर्क डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी सहित पंडित दीनदयालजी से संपर्क रहा। साहनी जी पर पंडित दीनदयालजी का प्रभाव काफी रहा।

श्री साहनी जनसंघ से लेकर भाजपा तक की यात्रा के दौरान सदैव महत्वपूर्ण दायित्व पर रहे। वे अपने मृदु व्यवहार

भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी का शोक–संदेश

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने भाजपा के वयोवृद्ध नेता एवं दिल्ली के पूर्व महापौर तथा मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री केदारनाथ साहनी के निधन पर अपना गहरा शोक और संवेदना प्रगट की है। श्री गडकरी ने अपने शोक संदेश में श्री साहनी को एक अनुशासित तथा समर्पित नेता बताते हुए कहा कि उन्होंने दिल्ली में तत्कालीन जनसंघ और बाद में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना में उल्लेखनीय योगदान दिया। श्री साहनी एक ईमानदार राजनीतिज्ञ एवं कुशल प्रशासक रहे और उन्होंने रा.स्व.सं, जनसंघ तथा भाजपा में प्रतिष्ठित पदों पर विराजमान रहे। उन्होंने दिल्ली के महापौर और देश की राजधानी में मुख्य कार्यकारी पार्षद जैसे प्रतिष्ठित पदों को भी सुशोभित किया।

केदारनाथ साहनी : एक संक्षिप्त जीवनवृत्त

केदारनाथ साहनी का जन्म 24 अक्तूबर 1926 को रावलपिण्डी (अब पाकिस्तान में) हुआ। वे स्नातक थे तथा हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी, उर्दू और पंजाबी (उनकी मातृभाषा) के विशिष्ट ज्ञाता थे। वे 1946 से 1948 तक सक्रिय रूप से जम्मू और काश्मीर राज्य में, विशेष रूप से पाकिस्तान-अधिकृत क्षेत्रों के समाज कार्यों से जुड़े रहे थे। श्री साहनी ने 1948 से 1953 तक पंजाब में कार्य किया, जहां से वह फिर दिल्ली पहुंचे। 1958 में, श्री साहनी को दिल्ली नगर निगम का 'एल्डरमेन' निर्वाचित किया गया और बाद में उन्हें उप-महापौर चुना गया, जिसकी शोभा उन्होंने 1959 से 1960 तक बढ़ाई। 1967 से 1971 तक की अवधि में वे दिल्ली नगर निगम की स्थायी समिति के चेयरमैन पद पर रहे। 1972 में, उन्हें दिल्ली का महापौर चुना गया, जिस पर वे 1975 तक आसीन रहे। 1973 में, वे आल इण्डिया मेयर्स कांफ्रेंस के चेयरमैन चुने गए। 1977 में, वह दिल्ली मेट्रोपॉलिटन कौंसिल के लिए निर्वाचित हुए और 1980 तक वे मुख्य कार्यकारी पार्षद बने रहे। 1990 में श्री साहनी को भारत सरकार की काश्मीर मामलों की परामर्श समिति के सदस्य पद पर नियुक्ति किया गया। 1958 से 1977 तक वह एक प्रकाशन संस्था भारत प्रकाशन लि. के महाप्रबंधक, सचिव और प्रबंध निदेशक रहे, जो अंग्रेजी में साप्ताहिक 'आर्गेनाइजर' तथा हिन्दी में साप्ताहिक 'पांचजन्य' का प्रकाशन करती है। 1971 में, उनके मार्ग निर्देशन में इस कम्पनी ने इंगलिश दैनिक 'दि मदरलैण्ड' का प्रकाशन प्रारम्भ किया, जिसे 'आपातकाल' थोपे जाने

और विषयों के प्रतिपादन में अग्रणी रहे हैं। वे पार्टी के अनुशासित कार्यकर्ता रहे। उनका जब स्वास्थ्य खराब हुआ तो उन्होंने दल के वरिष्ठ नेताओं से बताया कि अब वे दौड़भाग का काम नहीं कर सकते, पर वे 11 अशोक रोड पर स्थित केन्द्रीय कार्यालय पर अवश्य आते रहेंगे। वे व्यवस्था प्रेमी थे। कार्यकर्ताओं की हर बात सुनना उनका सहज स्वभाव हो गया था। श्री केदारनाथ साहनी जब तक बिस्तर पर नहीं गए तब तक वे प्रति गुरुवार को झंडेवाला की शाखा पर अवश्य आते थे। सबसे मिलकर सभी का हालचाल पूछते थे। केदारनाथ साहनी एक चलते-फिरते संदर्भ थे। उनका विदेशों में भी सभी से संपर्क था। वे अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक ''ओवरसीज फ्रेंडस ऑफ बीजेपी'' का कार्य करते रहे। संयम जीवन, धैर्य और दायित्व के प्रति सदैव जागरूक थे। राजनीति करना भी है तो सत्य के निकट रहते हुए करना चाहिए। उनकी स्थिति यह हो गई थी कि यदि किसी शोधकर्ता को भारतीय जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी पर शोध करना होता तो उन्हें सभी एक साथ कहते थे कि इन्हें श्री केदारनाथ साहनी के पास अवश्य भेजना चाहिए। वह शोधार्थी जब साहनीजी से मिलकर आता था, तो वह पूर्ण संतुष्ट होकर आता था। दिल्ली के अनेक नेता उनसे मार्गदर्शन लेने आते थे। उनका कहना रहता था कि हम सभी को पार्टी का कार्य सदैव करते रहना चाहिए। वे गोवा और सिक्किम के राज्यपाल रहे पर जब 11 अशोक रोड में रहे, तब उन्हें यह कभी नहीं लगा कि वे राज्यपाल रहे, यहां कैसे बैठेंगे।

श्री साहनी जी की एक खासियत और थी, वे हर पत्र का जवाब देते थे। हर विषय की जानकारी के लिए वे विषयों के जानकारों से सदैव संपर्क रखते थे। मुझे उनके साथ सतत् आठ वर्ष रहने का सौभाग्य मिला। वे अपने से छोटों से न केवल सम्पर्क रखते थे, बल्कि उचित मार्गदर्शन भी करते थे। एक दिन उन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि प्रभात झा! देखो पंडित दीनदयाल उपाध्याय से संपर्क रखने वाले लोग धीरे-धीरे दुनिया छोड़ रहे हैं। अत: आप एक काम करें, जो लोग बचे हैं उनसे संपर्क कर जो भी संस्मरण हों, उसे एकत्रित कर एक पुस्तक बना लीजिए। वह संस्मरण हमारे नए कार्यकर्ताओं के लिए बहुत लाभप्रद होगा। उन्होंने जैसे ही यह बात बताई, उसके बाद मैं उस काम में लग गया। मुझे खुशी है कि वह किताब पूरी हुई और ''अजातशत्रु'' के नाम से उसका विमोचन हुआ। वे स्वयं उस पुस्तक के कार्यक्रम में आए। मैं उनकी आंखों में विमोचन वाले दिन खुशी के आंसू देख रहा था। उसके बाद उन्होंने कहा कि ऐसे सभी लोगों से अगर हम संस्मरण लेते रहे तो हमारी आने वाली पीढ़ी को उचित मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

श्री साहनी रचनात्मक थे। मैं सदैव उनसे मिलता रहता था। वे मुझसे डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास की गतिविधियों की जानकारी लेते रहते थे। वे इन दिनों मौन साधक के रूप में सभी को भेंट देते थे। भारतीय राजनीति में वे एक प्रतिबद्ध कार्यकर्ता थे वे प्रतिमूर्ति थे। वे राजनीति में आयी गिरावट के प्रति सदैव चिंतित रहते थे। उनका एक घोष वाक्य था कि ''राजनीति तो सीधे रास्ते से होगी। लोग चाहे जितनी गलत रास्ते की तलाश करें, पर उन्हें तो हर हालत में सही रास्ते पर आकर ही राजनीति करनी होगी।''

श्री साहनी जी हर कार्यक्रम की शोभा हुआ करते थे। उनके किसी कार्यक्रम में पहुंचने मात्र से पुराने सभी कार्यकर्ताओं को लगता था कि उनके संरक्षक आ गए। श्री साहनी जी कहते थे कि उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जो संस्कार मिले वे अपने जीवन के अंत तक उसी संस्कार को लेकर चलते रहे। उन पर स्व. माधवराव जी मुले एवं स्व. भाऊराव जी देवरस का काफी प्रभाव था। राजनीति में रहते हुए वे कभी अपने बारे में नहीं सोचते थे। इतना ही नहीं वे तो कभी अपने को इतना वरिष्ठ नेता मानते ही नहीं थे। वे सहज, सरल और सदैव उपलब्ध रहने का प्रयत्न करते थे। साहनी जी काया से भले ही चले गए हों पर वे छाया के रूप में सदैव हमारे बीच रहेंगे। उनकी चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि। ■

के बाद 1975 में बंद करना पड़ा था। आपातकाल के दौरान, श्री साहनी को भूमिगत होना पड़ा था और उन्होंने 1976 में, उन्होंने थाईलैण्ड, सिंगापुर, मलेशिया, केन्या, मारीशियस और यू.के. का दौरा किया जिसका प्रयोजन था कि भारतीयों को तत्कालीन स्थितियों से अवगत कराया जाए। वे भारत में आम चुनावों की घोषणा के बाद ही वापस आए। इस सम्पूर्ण अवधि में, दिल्ली में श्री साहनी के आवास को पुलिस ने सील किया हुआ था। उन्होंने 18 मई 2001 को सिक्किम राज्य और 26 अक्तूबर 2002 को गोवा के राज्यपाल पदों का कार्यभार संभाला। वे ओवरसीज फ्रेंड्स ऑफ बीजेपी के प्रभारी के रूप में सक्रिय रूप से कार्य करते रहे। ऐसे लोकप्रिय नेता एवं कुशल प्रशासक श्री केदारनाथ साहनी का निधन नई दिल्ली स्थित बत्रा अस्पताल में 3 अक्टूबर 2012 को हो गया। श्री साहनी के परिवार में उनकी पत्नी श्रीमती विमला साहनी और दो पुत्र हैं। ■

केदारनाथ साहनी : वह हमारे रोल मॉडल थे

-ओम प्रकाश कोहली

अब साहनी जी हमारे बीच नहीं है। कल तक थे। प्रतिदिन नियम से कार्यालय आते थे। दोपहर बाद तीन बजे आना और पांच बजे जाना, यही उनका नियम था। इन दो घंटों में वह पत्रों के उत्तर देते थे, कार्यकर्ताओं और आगन्तुकों से मिलते थे। कार्यकर्ता उनके सामने अपना मन खोलते थे और उनसे मार्गदर्शन पाकर अपने को धन्य समझते थे। अब वह मार्गदर्शक नहीं रहा। जो कमरा भरा-भरा रहता था, अब खाली रहता है। नीड़ है, पर पंछी उड़ गया है।

केदारनाथजी अनुकरणीय आदर्शवाद की मिसाल थे। उनका आदर्शवाद कथनी नहीं करनी था।

श्री केदारनाथ साहनी का जन्म 24 अक्तूबर 1926 को हुआ था और वह 3 अक्तूबर, 2012 को दिवंगत हुए। 86 वर्षों की उनकी जीवन यात्रा घटनापूर्ण रही है। उनका व्यक्तित्व और कर्तृत्व बहुआयामी था। वह संघ के निष्ठावान स्वयंसेवक थे। संघ के प्रचारक के रूप में उन्होंने जम्मू-कश्मीर में 1946-48 के उस संकटपूर्ण दौर में अनुकरणीय कार्य किया जब पाकिस्तान प्रेरित कबायली मीरपुर और आसपास के इलाकों में तबाही मचा रहे थे। कबायली हमलावरों से हिन्दुओं को बचाने की गतिविधियों को साहनी जी ने ही संगठित किया था।

श्री केदारनाथ साहनी जी 1948 से 1953 तक पंजाब में सक्रिय रहे और वहां से दिल्ली चले आए। दिल्ली के सार्वजनिक जीवन में वह 1954 से 1980 तक सतत् सक्रिय रहे। 1958 में वह दिल्ली नगर निगम में एल्डरमैन चुने गए। वह दिल्ली नगर निगम में डिप्टी मेयर रहे, स्थायी समिति के अध्यक्ष रहे (1967-71) और 1972 में दिल्ली के मेयर बने। मेयर पद पर वह 1975 तक रहे। 1975 में देश पर इमरजेंसी थोप दी गई और साहनी जी को इमरजेंसी के विरोध में और लोकतंत्र की पुनर्स्थापना के पक्ष में विदेशों में लोकमत तैयार करने की जिम्मेदारी संभालनी पड़ी। आपातकाल के दौरान भूमिगत रहकर श्री केदारनाथ साहनी जी ने दुनिया के अनेक देशों का दौरा किया और लोकतंत्र के पक्ष में विश्वमत के निर्माण का दायित्व बखूबी निभाया।

आपातकाल समाप्त होने पर 1977 में वह दिल्ली महानगर परिषद के लिए चुने गए और 1980 तक दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद रहे।

कश्मीर की स्थिति और समस्या की साहनी जी को गहरी जानकारी थी। वह कश्मीर मामलों के मर्मज्ञ थे। जब 1990 में कश्मीरी पंडितों का बड़े पैमाने पर उत्पीड़न हुआ और उन्हें अपन 'वतन' छोड़ने पर विवश होना पड़ा तो कश्मीर के निर्वासित हिन्दुओं का पुनर्वास और कल्याण ही साहनी जी का मिशन बन गया। विभीषिका के उस दौर में कश्मीरी पंडित साहनी जी को अपना मसीहा मानते थे। आज भी कश्मीरी पंडितों से उनके गहरे संबंध है। 1990 में कश्मीर मामलों में भारत सरकार की परामर्शदात्री समिति के वह सदस्य नियुक्त किए गए थे।

श्री केदारनाथ साहनी 18 मई 2001 को सिक्किम के गवर्नर बने और 26 अक्तूबर, 2002 को गोवा के गवर्नर।

साहनी जी का कद बड़ा था, किन्तु संगठन की आवश्यकता को ध्यान में रख कर और संगठन के आदेश का पालन कर वह छोटे से छोटा दायित्व स्वीकार करने में हिचकते नहीं थे। दिल्ली प्रदेश का अध्यक्ष पद उनके कद के हिसाब से छोटा था, पर उन्होंने विनम्र भाव से यह दायित्व स्वीकार किया और उसे बखूबी निभाया।

साहनी जी का सम्पर्क जगत बहुत बड़ा रहा है। देश में और विदेश में उनके सम्पर्क का यह दायरा फैला हुआ है। एक बार किसी से सम्पर्क में आने के बाद साहनी जी उस सम्पर्क की निरन्तरता बराबर बनाए रखते थे। छोटे से छोटे कार्यकर्ता के पत्र का उत्तर देना उनका स्वभाव था। साहनी जी सम्पर्क कला के धनी थे। कठोर अनुशासन और निष्ठा वाले इस व्यक्ति के अन्त:स्थल में कार्यकर्त्ताओं के प्रति आत्मीयता की अन्त:सलिला निरन्तर प्रवाहित होती रहती थी। जरूरतमंद कार्यकर्त्ताओं की सहायता करने को वह सदैव उद्यत रहते थे। वज्र से कठोर और कुसुम से कोमल, ऐसा था साहनी जी का व्यक्तित्व।

कार्यकर्ताओं और सम्पर्क में आए लोगों के लिए श्री केदारनाथ साहनी 'रोल माडल' थे। अनुशासन के मामले में वह समझौता नहीं करते थे। समय की पाबंदी का वह कड़ाई से पालन करते थे और दूसरों से भी समय की पाबंदी के पालन की अपेक्षा रखते थे। वह विचारधारा के प्रति पूरी तरह समर्पित थे और सिद्धांतों के प्रति उनकी निष्ठा अडिग थी। पार्टी के बाहर उन्होंने कभी भी पार्टी की आलोचना नहीं की, लेकिन पार्टी के भीतर उपयुक्त मंच पर पार्टी नेतृत्व को उचित समय पर उचित सलाह देने में वह कभी भी नहीं हिचके। वह अनुकरणीय आदर्शवाद की मिसाल थे। उनका आदर्शवाद कथनी नहीं करनी था। यदि पार्टी कार्यालय आने-जाने के लिए वह कभी पार्टी की गाड़ी का उपयोग करते थे तो उसके एवज़ में उचित राशि एक लिफाफे में रखकर चुपचाप पार्टी कोष में जमा करा देते थे और किसी को इसकी भनक भी नहीं लगने देते थे। साहनी जी सचमुच राजनीति के संत थे, निस्पृह और निर्लिप्त संत। श्री केदारनाथ साहनी जी के प्रति शत शत नमन। ■

(लेखक भाजपा केन्द्रीय कार्यालय के प्रभारी हैं)

भारतीयों ने अमरीका में सम्मान प्राप्त किया है

– रामलाल, राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन), भाजपा

प्राचीनकाल से ही भारत के ऋषि-मुनि-संत भारत की ज्ञान परम्पराओं को लेकर भारत के बाहर गये और पूरी 'दुनिया का मार्गदर्शन किया। सुदूर क्षेत्रों तक भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार हुआ है। भारत के लोग अधिकार करने के लिए नहीं गये, ज्ञान बांटने के लिए गये। उनके माध्यम से लोगों ने भारत को समझा, कालांतर में आने-जाने के रास्ते खुले, साधन बढ़े, इस कारण से दुनिया की दूरियां छोटी दिखाने लगीं- स्वाभाविक रूप से एक देश से दूसरे देश में पढ़ाई-लिखाई नौकरी, व्यापार आदि विषयों के लिए लोगों का आना-जाना प्रारंभ हुआ। भारत से भी अनेकों देशों में लोग जाकर बसे- उनमें से जो अगली पीढ़ी तैयार हुई, उनका जन्म भी वहीं हुआ। वहां के वे स्वाभाविक रूप से नागरिक हो गये।

इनमें से बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जिनका जन्म भारत में हुआ पर नौकरी, शिक्षा, व्यापार जैसे विषयों के चलते भारत से बाहर जाकर बस गये। इसमें यदि अमेरिका का विचार करे तो वहां के आबादी का लगभग 1 प्रतिशत आबादी भारतीयों की है। यह संख्या 30 लाख से कुछ ऊपर है। इसमें अनेक लोग ऐसे हैं जो जनसंघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा से प्रभावित रहे हैं। वहां रहते हुए भी उनको भाजपा से सहानुभूति है। ऐसे सब लोगों को जोड़ने की दृष्टि से OFBJP की स्थापना हुई। भाजपा के कई वरिष्ठ नेताओं विशेष रूप से स्व. केदारनाथ साहनी जी एवं स्व. श्री बाल आपटे जी के मार्गदर्शन में यह कार्य निरंतर बढ़ता रहा। अब तो अमेरिका के बाहर भी अन्य कई देशों में नए चैप्टर खुले हैं। अकेले अमेरिका में 19 राज्यों में 21 चैप्टर काम कर रहा है। 35 राज्य ऐसे हैं जहां अच्छी संख्या में भारतीय हैं, इन राज्यों में भी चैप्टर खुले, उनकी सदस्य संख्या बढ़े और एक प्रभावी स्वरूप खड़ा हो इस दृष्टि से वहां के कार्यकर्ताओं की अपेक्षा थी कि संगठन की ओर से किसी का प्रवास हो। पिछले तीन वर्षो से वे लोग प्रयासरत थे। इस वर्ष राष्ट्रीय अध्यक्ष जी के निर्देशानुसार मुझे जाने का अवसर मिला।

प्रमुख रूप से न्यूजर्सी में उनकी दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यसमिति एवं परिषद की बैठकें हुई। राष्ट्रीय परिषद के साथ-साथ युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन और उनकी अलग से पदाधिकारियों की बैठक भी सम्पन्न हुई। वहां जाकर यह अनुभव हुआ कि भारतवासियों ने अपने कर्त्तव्यपरायणता एवं व्यवहार से अपने लिए सम्मान अर्जित किया है। अमेरिकन लोगों से मिलने के बाद ध्यान आया कि सभी के मन में भारतीयों के प्रति आदर का भाव है। अनेक क्षेत्र ऐसे हैं जहां पर भारतीयों का विशेष प्रभाव है। जैसे चिकित्सा क्षेत्र जिसमें 30 से 35 प्रतिशत भारतीय चिकित्सक हैं। आईटी का क्षेत्र है जिसमें बड़ी संख्या में भारतीय हैं। पेट्रोल पंप 50 प्रतिशत भारतीयों के हाथ में हैं- इसी तरह से और भी कई व्यवसाय में भारतीयों की भागीदारी है। यदि यह कहा जाए कि भारतीय अमेरिका की आवश्यकता भी बन गये हैं तो गलत नहीं होगा। धीरे-धीरे वहां के प्रशासन तक में भी अनेक लोग पहुंचे हैं और अच्छा काम कर रहे हैं। जहां तक अमेरिका की व्यवस्था का प्रश्न है, व्यवस्था प्रियता, पारदर्शिता, कानून-पालन, ये वहां के समाज का स्वभाव बना है। सामाजिक दृष्टि से ये बातें ग्रहण करने योग्य है।

वहां के संगठन विस्तार की दृष्टि से काम बांटकर 35 राज्यों में कार्य प्रारंभ हो तथा 1 प्रतिशत तक (30,000) सदस्यता हो, यह लक्ष्य वहां के सभी कार्यकर्ताओं ने अपने हाथ में लिया है। OFBJP के कार्यकर्ताओं को भारतीय जनता पार्टी और भारत के बारे में सकारात्मक सोच का वातावरण कैसे बने, इसका प्रयास निरंतर करते रहने का आग्रह किया। सभी भारतीयों से संवाद स्थापित करना उनको संपर्क के दायरे में लाना तथा उनकी समस्या के समाधान के लिए अमेरिका और भाजपा के माध्यम से प्रयास करना यह एक काम है। भाजपा राजनीतिक दल है, उसे चुनाव भी लड़ने होते हैं। प्रवासी भारतीयों का वोट डालना संभव नहीं होता फिर भी वे भारत में रहने वाले अपने संपर्क,

सगे-संबंधियों को भाजपा के पक्ष में वोट डालने के लिए कैसे प्रेरित कर सकते हैं- इसका भी आग्रह किया है।

न्यूजर्सी, न्यूयॉर्क, वाशिंगटन, टाम्पा (लोरिडा राज्य) की इकाइयों के कार्यक्रम हुआ, नियाग्रा फॉल में नई इकाई स्थापित करने की भूमिका तैयार हुई। ऑरलांडो की नई इकाई स्थापित हुई। सभी स्थानों पर कार्यकर्ताओं के साथ-साथ समाज के प्रबुद्ध वर्ग विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। सभी जगह प्रश्नोत्तर के सत्र हुए। आज भारत की राजनीति को दशादिशा, भारतीय जनता पार्टी की स्थिति, यूपीए सरकार के घोटाले और भ्रष्टाचार, महंगाई आदि विषयों पर चर्चा हुई। भारत भ्रष्टाचार मुक्त कैसे बने, यह सभी की चिंता का विषय था। साथ ही सबके मन में इच्छा थी केन्द्र की सत्ता में भाजपा को देखने की।

इस क्रम में चर्चा के दौरान निम्नलिखित बिन्दुओं पर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया गया:

- देश की एकता-अखंडता (डॉ. मुकर्जी का बलिदान)
- देश की सुरक्षा- 1962, '65, '71 कारगिल युद्ध के दौरान पार्टी की भूमिका
- लोकतंत्र की रक्षा- आपातकाल में किए गये कार्य
- संस्कृति की रक्षा- रामजन्मभूमि आंदोलन
- राष्ट्रीय गौरव की स्थापन-पोखरण विस्फोट
- सुशासन और जन कल्याण-जनसंघ से भाजपा का इतिहास

साथ ही यह भी बताया गया कि भारतीय जनता पार्टी देश में एजेंडा सेट करने में सफल रही है। और एक समय कांग्रेस से भी बड़ी पार्टी बन कर दिखाया। आज भाजपा की सदस्यता तीन करोड़ से ऊपर है। संसद में 165 से अधिक सांसद तथा विभिन्न राज्यों के विधानसभाओं में सैकड़ों विधायक हैं। लेह-लद्दाख से लेकर कन्याकुमारी और अंडमान निकोबार तक भाजपा की सांगठनिक इकाइयां हैं।

आज नौ राज्यों में भाजपा शासन में है जिनमें 7 मुख्यमंत्री हैं। यह देश की 35 प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व करती है। अलग-अलग क्षेत्रों में सभी सरकारें अच्छी कार्य कर री है। केन्द्रीय शासन-राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाएं अन्य एजेसिंयों ने विभिन्न विषयों के अपने सर्वेक्षणों में भाजपा सरकारों को अनेक बार प्रथम स्थान पर रखा है। कई योजनाएं तो ऐसी हैं जिन्हें अन्य दलों के राज्य सरकारे भी अपना रही हैं। गुजरात ने विकास के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल की हैं तथा तीव्र विकास करके दिखाया है। कर्नाटक और मध्य प्रदेश किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण उपलब्ध करा रहे हैं। मध्य प्रदेश द्वारा शुरू किया गया लाडली लक्ष्मी योजना अन्य राज्यों द्वारा भी अपनाया जा रहा है। छत्तीसगढ़ की जन वितरण प्रणाली की चहुंओर प्रशंसा हो रही है। झारखण्ड में मुख्यमंत्री दाल-भात योजना गरीबों को लाभ पहुंचा रही है जबकि बिहार की सड़क योजना को सीभी ने सराहा है। पंजाब, हिमाचल प्रदेश और गोवा भी विकास की नई इबारत लिख रहे हैं। देश की जीडीपी में इन राज्यों का महत्वपूर्ण योगदान है। पं. दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय - अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के उत्थान का मार्ग हमारे सरकार ने प्रशस्त किया है। राष्ट्रवाद, सुशासन, विकास और अंत्योदय, हमारी पार्टी की पहचान बनी है। वैचारिक दृष्टि से भी विभिन्न राज्य सरकारों ने अच्छी पहल की है। इस सबके आधार पर भारत की जनता में यह विश्वास बना है, भारतीय जनता पार्टी ही सशक्त विकल्प है।

युवाओं और महिलाओं के सम्मेलन में बोलते समय कहा गया कि भारत दुनिया में विशिष्ट संस्कृति वाला देश है, हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में विश्वास करते हैं। हमने दुनिया को एक बाजार नहीं परिवार माना है, भारत ने ही 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया' यानी सभी सुखी और स्वस्थ बने इसकी कल्पना की सामान्य अशिक्षित व्यक्ति भी उद्बोधन करते हैं- 'धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भाव हो, विश्व का कल्याण हो।' विश्व के कल्याण की भावना, एक घुट्टी में पिलाई गई है। स्वामी विवेकानंद ने भी जिनकी 150वीं जयंती मनायी जा रही है उन्होंने अमेरिका की धरती शिकागो में यही उद्घोष किया था सभी मत-पंथों का मार्ग एक परमपिता परमेश्वर की ओर ही जाता है जैसे सभी नदियां समुद्र में ही जाती हैं। सभी भारतवासी के कर्म में सभी के प्रति सौहार्द और सहिष्णुता का भाव हमेशा रहता है। यहां कार्य को केवल पूजा पद्धति नहीं बल्कि कर्त्तव्य से जोड़ा गया है। अध्यात्म यहां की विशेषता है। अध्यात्म का अर्थ मात्र वैराग्य नहीं है, सभी में समान, अनुभूति, करूणा का अनुभव करते हुए अपने मन को बड़ा करना है। यहां अपनी इन्हीं विशेषताओं के आधार पर भारत 'विश्व गुरू' बन सका। हम जहां भी हैं वहां अपनी इस विशेषताओं के आधार पर आत्मविश्वास उत्साह के साथ पराक्रम करते हुए आगे बढ़ेंगे तो हम भी नई ऊंचाइयों को छुएंगे तथा भारत के प्रति भी सभी के मन में आदर निर्माण करने में सफल होंगे। निश्चित रूप से एक दिन ऐसा आयेगा जब केवल हम नहीं दुनिया बोलेगी, भारत माता की जय।■

(डॉ. शिव शक्ति बक्सी से बातचीत पर आधारित)

द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने पर जोर

– **सुमित्रा महाजन,** सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री

गत 7 सितम्बर से 15 सितम्बर 2012 तक 58वें राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन के निमित्त भारत के एक प्रतिनिधिमंडल ने श्रीलंका का प्रवास किया। लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार के नेतृत्व वाले इस प्रतिनिधिमंडल में राज्यसभा के उपसभापति श्री पी. जे. कुरिअन, श्री कप्तान सिंह सोलंकी, श्री पिनाकी मिश्रा एवं श्री दीप गोगोई सहित मैं (सभी सांसद) भी इसमें शामिल थी। साथ ही इसमें लगभग 20 राज्यों के विधानसभाध्यक्ष भी सहभागी रहे। वास्तव में भारतीय प्रतिनिधिमंडल बहुत बड़ा था। राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन के अलग-अलग विषय होते हैं जिन पर चर्चाएं होती हैं। इस प्रतिनिधिमंडल का उद्देश्य था ''भारत-श्रीलंका के बीच सम्बंध सुधार हेतु प्रयास।''

महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण

पहले दिन विशेष रूप से राष्ट्रमंडल महिला संसदीय कार्यकारी समिति की बैठक थी। इसमें थोड़े लोग रहते हैं। भारत, श्रीलंका, मलेशिया, आस्ट्रेलिया, कनाडा सहित कुल 7 देशों के लोग थे। इसमें किसी और को जाना था लेकिन उनकी जगह मुझे भाग लेना पड़ा। पूरे दिन महिलाओं की स्थिति पर चर्चा होती रही। महिलाओं की स्थिति को लेकर हमने कहा कि महिला सशक्तिकरण को लेकर हमारे यहां कई सारी योजनाएं चलती हैं और उनकी जानकारी दी। साथ ही साथ मैंने कहा कि भारत ही एक ऐसा देश है जिसमें आप देखें तो विपक्ष की नेता महिला हैं। एक समय ऐसा था जब राष्ट्रपति महिला थी। लोकसभाध्यक्ष पहली बार महिला बनी है। सत्ताधारी गठबंधन की चेयरपर्सन महिला है। तो एक प्रकार से भारत में जो प्रमुख स्थान हैं वहां महिला आसीन हैं और यह चयन (selection) के माध्यम से नहीं अपितु चुनाव (election) के जरिए यह सब हुआ है। इसे मैंने अपने भाषण में आग्रहपूर्वक रखा। पहले दिन एक बात जो चर्चा में आई कि साधारणत: महिलाओं की स्थिति सभी देशों में एक जैसी ही हैं। राजनीतिक रूप से महिलाओं की जो पर्याप्त भागीदारी होनी चाहिए, वह किसी भी देश में नहीं हो पाया है। बैठक में यह तय हुआ कि अगले साल हम महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण पर बल देंगे।

श्रीलंका में विकास और शांति

श्रीलंका के राष्ट्रपति के भाषण में भी यह बात बार-बार आ रही थी कि हमने देश में शांति बहाल कर ली है और इसके बाद हम विकास की ओर बढ़ रहे हैं। श्रीलंका में पहले जो स्थिति थी, कहते थे कि पांच आदमियों के पीछे एक पुलिस, तो यह परिदृश्य अब बदल गया है। श्रीलंका में विकास-कार्यों में भारत अनेक प्रकार से मदद कर रहा है। यह हम सब जानते ही हैं। वहां मकान बनाने के लिए भी भारत ने मदद की है, यातायात व्यवस्था में हम उनका सहयोग कर रहे हैं, साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें विशेषज्ञता उन्हें उपलब्ध करा रहे हैं। तो कहीं न कहीं भारत-श्रीलंका के सम्बंधों में एक मिठास लाने की कोशिश हो रही है। श्रीलंका नये सिरे से आगे बढ़ना चाहता है तो भारत उसका साथ दे रहा है। ये हमें दिखाई दे रहा है। तो इसलिए मुझे एक प्रकार से लगता है कि यह सद्भावना-यात्रा जैसी भी थी। राष्ट्रमंडल से जुड़े अनेक विषयों पर हमारी अलग-अलग चर्चा होती थी रोज। समूहों में चर्चा होती थी। हमारे बीच उनसे अंतर्संवाद चल रहे थे। हमारी लोकसभाध्यक्ष सबसे मिल रही थी। श्रीलंका का यह प्रयास था कि वो दिखाना चाहते थे कि अब सब ठीक है यहां।

वैश्विक आतंकवाद का मुद्दा

प्रतिनिधिमंडल सदस्यों को उन्होंने जाफना भी घुमाया। लोगों से साक्षात्कार हुए। अब वहां भी विकास और शांति है। हमने कहा कि आतंकवाद अब वैश्विक समस्या बन गया है। इसलिए इसको लेकर जीरो टॉलरेंस की नीति बनानी होगी। ड्रग ट्रैफिकिंग, मनी लॉडरिंग, ये प्रमुख चुनौती है। सबको मिलकर इसका हल ढूढंना चाहिए और इसके लिए एक comprehensive convention की जरूरत है।

सांस्कृतिक मैत्री

इन दिनों कपिलवस्तु के पवित्र अवशेष श्रीलंका में लाए गए हैं। लाखों की संख्या में लोग इन्हें देखने के लिए आए। यह भी सद्भावना का एक प्रतीक था। उन्होंने हमें बुद्ध के दांत के दर्शन कराये। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। अद्भुत रहे। अप्रतिम। वहां के नृत्य पर भारतनाट्यम की छाप दिखी।

और सबसे दिलचस्प और महत्वपूर्ण बात। वो भी अपने राष्ट्र को मां का दर्जा देते हैं। यह उनके राष्ट्रगान – ''नमो-नमो श्रीलंका माता'' से साफ-साफ परिलक्षित होता है। ■

(संजीव कुमार सिन्हा से बातचीत पर आधारित)